



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1
PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 158]

नई दिल्ली, मंगलवार, जून 7, 2005/ज्येष्ठ 17, 1927

No. 158]

NEW DELHI, TUESDAY, JUNE 7, 2005/JYAISTHA 17, 1927

वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं सम्बद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 7 जून, 2005

अन्तिम जाँच पारणाम

विषय:- चीन जनवादी गणराज्य एवं चीनी ताइपेई के मूल के अथवा वहाँ से निर्यातित नैरो बोवेन फैंब्रिक्स के आयात से संबंधित पाटनरोधी जाँच

सं. 14/24/2003-डीजीएडी - 1995 में यथा संशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 और सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण और क्षति निर्धारण) नियमावली 1995 को ध्यान में रखते हुए:

क. **प्रक्रिया**

1. जाँच के सम्बंध में निम्नलिखित प्रक्रिया का अनुपालन किया गया है:-

(i) उपर्युक्त नियमों के अन्तर्गत निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिसे एतदपश्चात् प्राधिकारी कहा गया है) ने 9 जून, 2004 को चीन जनवादी गणराज्य और चीनी ताइपेई (जिन्हें एतदपश्चात् सम्बद्ध देश भी कहा गया है) के मूल के अथवा वहाँ से निर्यातित नैरो बोवेन फैंब्रिक्स के आयातों के बारे में पाटनरोधी जाँच शुरू करते हुए एक सार्वजनिक सूचना घोषित की जिसे भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया गया। पाटनरोधी कार्रवाई उक्त उत्पाद के घरेलू उत्पादन के एक बड़े भाग का प्रतिनिधित्व करने वाली मै0 स्काई इंडस्ट्रीज लिमिटेड, मुम्बई (आवेदक) से घरेलू उद्योग की ओर से प्राप्त शिकायत के बाद शुरू की गयी थी। शिकायत में उक्त उत्पाद के पाटन और उससे हुई वास्तविक क्षति के साक्ष्य निहित थे जिन्हें कार्रवाई शुरू करने के औचित्य के लिए पर्याप्त माना गया था।

(ii) जाँच की शुरुआत से पूर्व प्राधिकारी ने उपर्युक्त नियम 5 के उपनियम (5) के अनुसार जाँच शुरू करने से पहले याचिकाकर्ता की पूर्णतः प्रलेखित याचिका प्राप्त होने के बारे में भारत स्थित सम्बद्ध देशों के दूतावासों/उच्चायोगों को सूचित किया।

(iii) उपर्युक्त नियम 6 के उपनियम (2) के अनुसार प्राधिकारी ने ज्ञात निर्यातक उत्पादकों, आयातकों, उद्योग एशोसिएशनों, संबंधित देशों के दूतावासों को उक्त सार्वजनिक सूचना की प्रति भेजी और अपने विचारों से लिखित में अवगत कराने के लिए उन्हें अवसर प्रदान किया।

(iv) उपर्युक्त नियम 6 के उपनियम (3) के अनुसार प्राधिकारी ने सभी ज्ञात निर्यातकों और भारत स्थित सम्बद्ध देशों के दूतावासों को आवेदन की प्रति उपलब्ध कराई। उपर्युक्त नियम 6 के उपनियम (4) के अनुसार प्राधिकारी ने सभी ज्ञात निर्यातकों और भारत स्थित सम्बद्ध देशों के दूतावासों तथा अन्य हितबद्ध पार्टियों को संगत प्रश्नावली की एक प्रति उपलब्ध कराई। जाँच की शुरुआत के बारे में नई दिल्ली स्थित सम्बद्ध देशों के दूतावासों/उच्चायोगों को भी सूचित किया गया और उनसे निर्धारित समय के भीतर प्रश्नावली का उत्तर देने हेतु अपने देशों के निर्यातकों/उत्पादकों से कहने का अनुरोध किया गया।

(v) प्राधिकारी ने संगत सूचना माँगने के लिए सम्बद्ध देशों के निम्नलिखित ज्ञात निर्यातकों को प्रश्नावलियाँ भेजी:-

1. मै0 त्रि हुक, चीनी ताइपेई
2. ताइवान स्पेशल टेप कम्पनी, चीनी ताइपेई
3. झेझियांग हॉगविंग कं0 लि0, चीन जन. गण.
4. चिको टेक्सटाइल इंडस्ट्रीज लि0, चीनी ताइपेई
5. ताइवान जोका कार्पोरेशन, चीनी ताइपेई

(vi) किसी भी निर्यातक ने निर्यातक प्रश्नावली और जाँच शुरुआत संबंधी सूचना का उत्तर नहीं दिया है। मै0 कंट्री क्राफ्ट्स के अलावा किसी आयातक ने भी आयातक प्रश्नावली का उत्तर नहीं दिया है। तथापि, उन्होंने प्राधिकारी के समक्ष किसी गोपनीय सूचना की अगोपनीय प्रति प्रस्तुत नहीं की है। अनेक हितबद्ध पार्टियों द्वारा व्यक्त एवं प्रस्तुत सभी विचारों पर वर्तमान जाँच के संबंध में प्राधिकारी ने सम्भव सीमा तक विचार किया है।

(vii) प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पार्टियों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य के अगोपनीय अंश उसके द्वारा रखी गयी सार्वजनिक फाइल के रूप में उपलब्ध रखे और उसे हितबद्ध पार्टियों के निरीक्षण हेतु खुला रखा।

(viii) **** से इस अधिसूचना में हितबद्ध पार्टियों द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत सूचना का पता चलता है और प्राधिकारी ने नियमानुसार उसे गोपनीय ही माना है।

(ix) पाटन और क्षति की जाँच में 1 जनवरी, 2003 से 31 दिसम्बर, 2003 तक की अवधि (जिसे जाँच अवधि भी कहा गया है) शामिल थी। क्षति विश्लेषण के सम्बंध में रुझानों की जाँच में 1 अप्रैल, 2000 से जाँच अवधि की समाप्ति तक की अवधि शामिल थी।

(x) प्रारंभिक जाँच परिणाम 10 जनवरी, 2005 को जारी किए गए थे और सभी हितबद्ध पार्टियों से अनुरोध किया गया था कि वे अपनी टिप्पणियाँ 40 दिनों के भीतर प्रस्तुत करें। प्राधिकारी ने प्रारंभिक जाँच परिणाम की एक प्रति सम्बद्ध देशों के दूतावासों को इस अनुरोध के साथ भेजी थी कि वे अपने देश के निर्यातकों और उत्पादकों को प्रारंभिक जाँच परिणाम पर अपने विचार प्रस्तुत करने की सलाह दें।

(xi) प्राधिकारी ने सभी हितबद्ध पार्टियों को अपने विचार मौखिक रूप से 2 मार्च, 2005 को प्रस्तुत करने का सुअवसर प्रदान किया। अपने विचार मौखिक रूप से प्रस्तुत करने वाली सभी पार्टियों से मौखिक रूप से

व्यक्त विचारों को लिखित में प्रस्तुत करने के अनुरोध किए गए थे। पार्टियों को सलाह दी गयी थी कि विरोधी पार्टियों द्वारा व्यक्त विचारों की प्रतियाँ प्राप्त कर उनका खण्डन, या कोई हो, प्रस्तुत करें।

(xii) प्रारंभिक जाँच परिणामों की घोषणा से पूर्व हितबद्ध पार्टियों द्वारा दिए गए तर्कों जिन्हें प्रारंभिक जाँच परिणाम अधिसूचना में प्रकाशित किया गया था उन्हें संक्षिप्तता के लिए यहाँ दुहराया नहीं गया है। तथापि, प्रारंभिक जाँच परिणाम एवं प्रकटन के जारी होने के बाद हितबद्ध पार्टियों द्वारा दिए गए तर्कों पर इस अन्तिम जाँच परिणाम में विचार किया गया है।

(xiii) नियमावली के नियम 16 के अनुसार इन जाँच परिणामों के लिए विचारित आवश्यक तथ्यों/आधार को 25 मई, 2005 को ज्ञात हितबद्ध पार्टियों को दिखाया गया और उनके संबंध में प्राप्त टिप्पणियों पर इन जाँच परिणामों में भी विधिवत रूप से विचार किया गया है।

(xiv) प्राधिकारी ने पाटन और परिणामी क्षति के प्रारम्भिक निर्धारण के प्रयोजनार्थ आवश्यक समझी गयी समस्त सूचना माँगी और उसका सत्यापन किया। प्राधिकारी ने आवश्यक समझी गयी सीमा तक घरेलू उद्योग की मौके पर जाँच की। प्राधिकारी ने याचिकाकर्ता द्वारा प्रस्तुत सूचना के अनुसार सामान्यतः स्वीकृत लेखा सिद्धांतों के आधार पर उत्पादन की उचित लागत तथा भारत में सम्बद्ध वस्तु को बनाने और बेचने की लागत निकालने के लिए घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत का भी विश्लेषण किया था ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि क्या घरेलू उद्योग को हुई क्षति की समाप्ति के लिए पाटन मार्जिन से कम पाटनरोधी शुल्क पर्याप्त होगा।

ख. विचाराधीन उत्पाद

2. वर्तमान जाँच में विचाराधीन उत्पाद, 'फास्निंग टेप के रूप में प्रयुक्त मानव निर्मित फाइबरों से बनाया हुआ पाइल बीव वाला नैरो वोवेन फैब्रिक' है (जिसे आगे सम्बद्ध वस्तु भी कहा गया है)। बाजारी भाषा में सम्बद्ध वस्तु को 'हुक एंड लूप टेप फास्नर्स', 'बेलक्रो टेप्स', 'फास्निंग टेप्स', 'फास्नर्स' आदि जैसे विभिन्न समानार्थी उत्पादों के रूप में जाना जाता है। उत्पाद की एकमात्र विशेषता 'पाइल बीव' है। सम्बद्ध वस्तु का वर्णन पील स्ट्रेन्थ, शीयर स्ट्रेन्थ और लाइट फास्नेस के संबंध में किया जाता है। हुक एंड लूप फास्नर्स सामान्यतः मानव निर्मित फाइबर (यार्न) नाइलोन (नाइलोन 6 और नाइलोन 6,6), पालिस्टर आदि से तैयार किये जाते हैं। विचाराधीन उत्पाद का उत्पादन 12 मिमी. से 125 मिमी. तक की चौड़ाई के बीच विशिष्ट आकारों में किया जाता है। इसके अलावा जब बाजार में उत्पाद की बिक्री उत्पाद की लम्बाई (मीटरों में) के अनुसार की जाती है तथा उत्पाद के विभिन्न प्रकारों की सम्बद्ध लागत और कीमत चौड़ाई के अनुसार अलग-अलग होती है तो भार में परिवर्तित होने पर यह लगभग एक समान हो जाती है। सम्बद्ध वस्तु का उपयोग मुख्यतः गार्मेंट उद्योग जैसे उद्योगों, शल्य चिकित्सा एवं विकलांग हेतु उपकरणों के विनिर्माण, जूता एवं फुटवियर विनिर्माण, असबाब/बैग विनिर्माण, खिलौने, ऑटो मोबाइल, जीन्स आदि एवं विभिन्न अन्य औद्योगिक क्षेत्रों में किया जाता है। नैरो बोवेन फैब्रिक सीमाशुल्क अधिनियम 1975 के सीमाशुल्क उपशीर्ष 580610 के अन्तर्गत वर्गीकृत है। अनन्तिम जाँच परिणाम के पश्चात, आयातक मै0 कन्द्री क्राफ्ट ने प्राधिकारी से यह स्पष्ट करने को कहा कि क्या जाँच केवल हुक एवं लूप टेप के संबंध में ही की गयी है जबकि अधिसूचना में पूरे अध्याय को शामिल किया गया है। प्राधिकारी स्पष्ट करते हैं कि पाटनरोधी जाँच केवल विचाराधीन उत्पाद, जैसा कि ऊपर कहा गया है (जिसे एतदपश्चात सम्बद्ध वस्तु भी कहा गया है), के संबंध में प्रचालित की गयी है। जैसा कि जाँच शुरूआत संबंधी अधिसूचना में उल्लेख

किया गया है, उक्त सीमाशुल्क वर्गीकरण जाँच के दायरे पर किसी भी रूप से बाध्यकारी नहीं है।

ग. समान वस्तु

3. याचिकाकर्ता ने दावा किया है कि उसके द्वारा उत्पादित वस्तुएं सम्बद्ध देश के मूल की अथवा वहां से निर्यातित वस्तुओं के समान वस्तुएं हैं। याचिकाकर्ता द्वारा उत्पादित और सम्बद्ध देशों से निर्यातित सम्बद्ध वस्तुओं में विशेष अन्तर नहीं है। याचिकाकर्ता का दावा है कि दोनों तकनीकी और वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय हैं।
4. मै0 कंट्री क्राफ्ट ने प्राधिकारी का ध्यान इस तथ्य की ओर दिलाया है कि सम्बद्ध वस्तु सदृश नहीं है और हुक एवं लूप टेप के विनिर्माण में प्रयुक्त कच्चे माल को मूलतः तीन अलग-अलग श्रेणियों, अर्थात् पोलिस्टर नाइलोन/पॉलिस्टर एवं नाइलोन में वर्गीकृत किया गया है जिसका अर्थ यह है कि निविष्टि एवं तीनों अंतिम उत्पादों के मूल्य भिन्न-भिन्न हैं और इसलिए उन्होंने आगे यह कहा है कि उत्पाद के समस्त अलग-अलग प्रकारों के लिए एक ही प्रकार का सन्दर्भ उपयुक्त नहीं है। घरेलू उद्योग का कथन है कि सम्बद्ध वस्तु को मूलतः फासनिंग के उपयोग में लाया जाता है। हुक एवं लूप को विभिन्न उद्योग खंडों में प्रयोग किया जा सकता है। परिधान उद्योग, चर्म उद्योग एवं अन्य उद्योगों द्वारा प्रयोग किए जाने वाले हुक एवं लूप टेप में वही मूल विशेषताएं हैं जोकि उसी कच्चे माल के प्रयोग से उत्पादित हैं एवं जिससे एक सामान्य उद्देश्य की पूर्ति होती है अतः उन्हें एक समान वस्तु माना जाना चाहिए।
5. समान वस्तुओं की परिभाषा से संबंधित नियम 2 (घ) में यह विनिर्दिष्ट है कि समान वस्तु का तात्पर्य ऐसी किसी वस्तु से है जो जाँचाधीन वस्तुओं से हर प्रकार से "समनुरूप" अथवा "समान" है अथवा ऐसी किसी वस्तु के अभाव में ऐसी अन्य वस्तु से है जिसकी विशेषताएं जाँचाधीन वस्तु की विशेषताओं से अत्यधिक मिलती जुलती हैं। इस बात को सिद्ध करने के लिए कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित सम्बद्ध वस्तु सम्बद्ध देशों से निर्यातित वस्तु के समान वस्तु है, प्राधिकारी ने तकनीकी विनिर्देशनों, विनिर्माण प्रक्रिया, कार्य एवं उपयोग तथा टैरिफ वर्गीकरण पर विचार किया है। जांच के बाद प्राधिकारी मानते हैं कि भिन्न-भिन्न प्रकार की सम्बद्ध वस्तुओं के बीच काफी हद तक प्रतिस्थापनीयता है और एक ही कच्चे माल से विभिन्न प्रकार के उत्पाद बनाए जाते हैं उत्पाद प्रौद्योगिकी एवं विनिर्माण प्रक्रिया एक ही उद्देश्य की पूर्ति हेतु अपनाए गए हैं (अर्थात् जैसे फासनिंग टेप) जो कि उसी टैरिफ वर्गीकरण के अन्तर्गत आते हैं। आगे यह माना जाता है कि केवल तथ्य यह है कि प्रत्येक उत्पादक द्वारा उत्पादित एवं बेचे गए उत्पादों की भिन्न-भिन्न किस्में जांच परिणाम को निष्पत्ती नहीं करती हैं जबकि एक समान मूल कच्ची सामग्री, उत्पादन प्रौद्योगिकी एवं विनिर्माण प्रक्रिया से तैयार की जाती हैं और एक ही समान उद्देश्य (अर्थात् जैसे फासनिंग टेप) के लिए प्रयोग में लायी जाती हैं।
6. इसलिए प्राधिकारी नोट करते हैं कि सम्बद्ध देशों में विनिर्मित एवं भारतीय बाजार में निर्यातित नैरो वोवेन फैब्रिक्स " और घरेलू उद्योग द्वारा विनिर्मित सम्बद्ध वस्तु की तात्त्विकता, उत्पाद विशेषताएं, विनिर्माण प्रक्रिया, प्रौद्योगिकी, कार्य और प्रयोग, कीमत, आवंटन एवं विपणन तथा वस्तुओं का टैरिफ वर्गीकरण समान है। दोनों तकनीकी एवं वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय हैं। घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित नैरो वोवेन फैब्रिक्स और चीन जन.गण. एवं ताइवान से आयात की जा रही वस्तुओं को वर्तमान जांच में पाटनरोधी नियमों के अनुसार समान वस्तु माना गया है।

(घ) घरेलू उद्योग

7. भारत में घरेलू समान उत्पाद के चार उत्पादक हैं। मै0 स्काई इंडस्ट्रीज लि0, मुम्बई ने आवेदन प्रस्तुत किया है। मै0 मैजिक फास्टेनर्स प्रा0 लि0 दिल्ली और सिद्धार्थ फिलामेंट प्रा0 लि0 तथा सिद्धार्थ मैजिक टेप प्रा0 लि0 सूरत ने आवेदक द्वारा प्रस्तुत आवेदन का समर्थन किया है। इन समर्थक कंपनियों ने जांच शुरू होने के बाद क्षति से संबंधित कुछ सूचना प्रस्तुत की है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि याचिकाकर्ता मै0 स्काई इंडस्ट्रीज लि0 द्वारा किया गया उत्पादन भारत में समान वस्तु के कुल घरेलू उत्पादन के 50 प्रतिशत से अधिक बनता है।

8. प्राधिकारी ने यह निर्धारित किया है कि (क) याचिकाकर्ता कंपनियों के उत्पादन का भारतीय उत्पादन में प्रमुख हिस्सा बनता है; (ख) आवेदन का स्पष्ट रूप से समर्थन करने वाले घरेलू उत्पादकों का घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित समान उत्पाद के कुल उत्पादन में 50 प्रतिशत हिस्सा बनता है; (ग) आवेदन घरेलू उद्योग द्वारा या उसकी ओर से किया गया है। प्राधिकारी उपर्युक्त की जांच करने के बाद यह निर्धारित करते हैं कि याचिकाकर्ता नियम 2 (घ) के साथ पठित नियम 2 (ख) के अर्थ के भीतर घरेलू उद्योग बनते हैं और संबंधित नियमावली के नियम 5 (3) (क) के अनुसार याचिका दायर करने की योग्यता संबंधी मानदंडों को पूरा करते हैं।

9. तथापि, प्रारंभिक पाटनरोधी शुल्क लागू होने के बाद से भारत में संबद्ध वस्तु के तीन अन्य उत्पादकों अर्थात् मै0 मैजिक फास्टेनर्स प्रा0 लि0, सिद्धार्थ फिलामेंट्स प्रा0 लि0 और मै0 सिद्धार्थ मैजिक टेप प्रा0 लि0 ने जांच में भागीदारी करने की अपनी इच्छा व्यक्त की है और क्षति संबंधी निर्णयों पर पहुँचने के लिए महत्वपूर्ण सूचना प्रस्तुत की। तथापि इन उत्पादकों द्वारा प्रस्तुत सूचना के सत्यापन के पश्चात्, यह पाया गया कि दो उत्पादकों द्वारा प्रदत्त सूचना निर्धारित ढंग और पद्धति के अनुसार नहीं थी और इसे क्षति के निर्धारण के प्रयोजनार्थ स्वीकार नहीं किया जा सकता था और इसलिए प्राधिकारी ने मै0 मैजिक फास्टेनर्स प्रा0 लि0 को घरेलू उद्योग के दायरे में शामिल करने परन्तु सिद्धार्थ मैजिक टेप और सिद्धार्थ फिलामेंट्स को इससे बाहर रखने का निर्णय लिया है।

(ड.) न्यूनतम निर्धारित सीमा

10. जहां तक यह निर्धारित करने का संबंध है कि जाँच अवधि (पी ओ आई) के दौरान सम्बद्ध देशों से हुए आयात न्यूनतम निर्धारित सीमा से अधिक हैं प्राधिकारी ने डीजीसीआईएंडएस द्वारा उपलब्ध कराये गये सम्बद्ध देशों से सौदेवार आँकड़ों का उल्लेख किया है। आँकड़ों की जाँच करने के बाद प्राधिकारी यह मानते हैं कि आयातों की मात्रा के सम्बंध में सभी सम्बद्ध देशों से हुए आयात न्यूनतम निर्धारित सीमा से अधिक है।

(च)* पाटन

11. सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 की धारा 9क (i)। के तहत किसी वस्तु के संबंध में सामान्य मूल्य का अर्थ है:-

* सामान्य व्यापार के दौरान समान वस्तुओं के लिए उपधारा (6) के अंतर्गत बने नियम के अनुसार यथानिर्दिष्ट तुलनात्मक मूल्य जबकि ऐसी वस्तु निर्यातक देश या क्षेत्र में उपभोग के लिए आशयित हो, या

जहाँ निर्यातक देश या क्षेत्र के घरेलू बाजार में सामान्य व्यापार के दौरान समान वस्तु की कोई बिक्री नहीं हो या विशेष बाजार दशा के कारण अथवा निर्यातक देश या क्षेत्र के घरेलू बाजार में बिक्रियों की कम मात्रा के कारण, ऐसी बिक्रियों की वजह से समुचित तुलना नहीं हो सकती हो तो सामान्य मूल्य या तो:-

निर्यातक देश या क्षेत्र से या किसी उचित तीसरे देश से आयात किए जाने पर समान वस्तु का उपधारा (6) के अंतर्गत बने नियमों के अनुसार निश्चित तुलनात्मक प्रतिनिधि मूल्य, या

उपधारा (6) के अंतर्गत बने नियमों के अनुसार यथा निश्चित प्रशासनिक, बिक्री और सामान्य लागतों एवं लाभों के लिए उचित वृद्धि के साथ वस्तु मूल के देश में उक्त वस्तु के उत्पादन की लागत ।

बशर्ते कि वस्तु का आयात जब मूलता के देश से भिन्न अन्य किसी देश से किया गया हो तथा जहाँ वस्तु निर्यात के देश से केवल गुजरी हो या ऐसी वस्तु निर्यात के देश में उत्पादित नहीं होती हो या निर्यात के देश में उसका कोई तुलनात्मक मूल्य नहीं हो तो इसके सामान्य मूल्य का निर्धारण मूलता के देश में इसके मूल्य के संदर्भ में किया जाएगा ।

12. प्राधिकारी ने धारा 9क, (1) (ग) के अनुसार सामान्य मूल्य के निर्धारण हेतु सभी ज्ञात निर्यातकों को प्रश्नावलियाँ भेजी । किसी भी निर्यातक ने जाँच शुरूआत संबंधी सूचना पर प्रश्नावली का किसी भी रूप में उत्तर नहीं दिया है और परिणामतः उन्हें इस जाँच में असहयोगी माना गया है ।

च (1) चीन जन.गण.

(क) सहयोग

13. किसी भी ज्ञात निर्यातक ने निर्यातक प्रश्नावली में उल्लिखित विभिन्न परिशिष्टों के बारे में सूचना देते हुए निर्यातक प्रश्नावली का उत्तर नहीं दिया है ।

(ख) सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत

14. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि किसी भी निर्यातक ने निर्यातक प्रश्नावली के अंतर्गत यथापेक्षित कोई सूचना प्रस्तुत नहीं की है । यह भी नोट किया गया है कि उन्होंने गैर-बाजार अर्थव्यवस्था से संबंधित पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध I के 8(3) में यथाउल्लिखित अवधारणाओं का खण्डन करते हुए कोई सूचना नहीं भेजी है । चूँकि विभिन्न परिशिष्टों के अंतर्गत कोई सूचना प्रस्तुत नहीं की गई है इसलिए प्राधिकारी यह निर्धारण नहीं कर सकते कि क्या घरेलू बिक्रियाँ व्यापार की सामान्य प्रक्रियाओं में की गई है ।

15. निर्यातक से संबंधित सूचना प्राप्त न होने के कारण प्राधिकारी ने सामान्य मूल्य का परिकलन चीन जनवादी गणराज्य के सभी उत्पादकों/निर्यातकों के लिए पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध 1 के पैरा 7 के अनुसार की है। कारखाना द्वार स्तर पर निर्यात कीमत का निर्धारण चीन जनवादी गणराज्य से आयातों की कुल मात्रा और समायोजनों के पश्चात भारत में भारित औसत निर्यात कीमत को लेकर किया गया है।

(ग) पाटन मार्जिन

16. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध I के नियम 6(IV) के अनुसार पाटन मार्जिन भारित औसत निर्यात कीमत के साथ भारित औसत सामान्य मूल्यों के आधार पर निर्धारित किया गया था। तुलना से जांच अवधि के दौरान निर्यातक द्वारा सम्बद्ध वस्तुओं के पाटन की मौजूदगी मालूम हुई थी। निर्यात कीमत के प्रतिशत के रूप में व्यक्त भारित औसत पाटन मार्जिन का निर्धारण किया गया है जो 355 प्रतिशत है।

च (2) चीनी टाईपेई

(क) सहयोग

17. ज्ञात निर्यातक अथवा जांच आरम्भ के पश्चात अपनी जानकारी देने वाले किसी भी निर्यातक ने निर्यातक प्रश्नावली में उल्लिखित विभिन्न परिशिष्टों के बारे में सूचना देते हुए निर्यातक प्रश्नावली का उत्तर नहीं दिया है। जांच प्रारंभ करने के पश्चात ताइवानी आर्थिक और सांस्कृतिक केन्द्र ने अपनी सरकार की ओर से भारत को चीनी टाईपेई निर्यातों को पुनः मालूम करने के लिए प्राधिकारी को कहा था क्योंकि उनके व्यापार आंकड़ों से जांच अवधि के दौरान भारत को कोई निर्यात मालूम नहीं हुआ था। उन्होंने प्राधिकारी से चीनी टाईपेई के विरुद्ध जांच को समाप्त करने का भी अनुरोध किया था क्योंकि उस देश से भारत में कोई आयात नहीं किए गए हैं। प्राधिकारी ने प्रारंभिक जांच परिणाम में यह नोट किया कि उन्होंने डीजीसीआईएण्डएस से सौदेवार आयात सूचना मालूम करने के पश्चात सम्बद्ध जांच शुरू की थी। तथापि चीनी टाईपेई से पत्र प्राप्त होने के पश्चात प्राधिकारी ने चीनी टाईपेई से उद्गम वाली संबद्ध वस्तुओं के दिल्ली (आईसीडी, तुगलकाबाद) पत्तन से सौदेवार आयातों का अनुरोध करते हुए उस अंतर्देशीय पत्तन के जरिए हुए आयात मालूम किए थे। आयात सौदों की जांच करने के पश्चात प्राधिकारी को यह सूचना दी गई थी कि अनेक सौदे किए गए थे जिनसे उस देश से सम्बद्ध वस्तु के आयात का साक्ष्य प्राप्त होता है। तदनुसार निर्यातकों के नामों और तारीखों सहित बी/ई संख्याओं के साथ-साथ चीनी टाईपेई से किए गए आयात वितरण की एक प्रति चीनी टाईपेई प्राधिकारियों को भेजी गई थी। तथापि, सार्वजनिक सुनवाई के बाद, ताइवान आर्थिक और सांस्कृतिक केन्द्र, नई दिल्ली ने इस बात की पुष्टि की कि उन्होंने जांच अवधि के दौरान भारत को संबद्ध वस्तु का निर्यात किया था।

(ख) सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत

18. प्राधिकारी ने यह नोट किया है कि किसी भी निर्यातक ने निर्यातक प्रश्नावली के अंतर्गत यथापेक्षित कोई सूचना प्रस्तुत नहीं की है। चूंकि विभिन्न परिशिष्टों के अंतर्गत कोई सूचना प्रस्तुत नहीं की गई है इसलिए प्राधिकारी यह निर्धारण नहीं कर सकते कि क्या घरेलू बिक्रियाँ व्यापार की सामान्य

प्रक्रिया में की गई हैं। इन परिस्थितियों में नियमों के अंतर्गत सामान्य मूल्य का निर्धारण नियमावली 6(8) के अनुसार उपलब्ध तथ्यों के आधार पर किया जाता है।

19. कारखाना द्वार स्तर पर निर्यात कीमत का निर्धारण लागू समायोजनों के साथ भारत को भारत औसत निर्यात कीमत लेकर किया गया है।

(ग) पाटन मार्जिन

20. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध 1 के नियम 6(IV) के अनुसार पाटन मार्जिन का निर्धारण भारत औसत निर्यात कीमत के साथ भारत औसत सामान्य मूल्य के आधार पर किया गया था। तुलना से जांच अवधि के दौरान निर्यातक द्वारा सम्बद्ध वस्तु के पाटन की मौजूदगी मालूम हुई है। निर्यात कीमत के प्रतिशत के रूप में व्यक्त किए गए भारत औसत पाटन मार्जिन का निर्धारण किया गया है जो 298 प्रतिशत है।

देश	उत्पादक/निर्यातक का नाम	सामान्य मूल्य	निर्यात कीमत	पाटन मार्जिन %
चीन जनवादी गणराज्य	सभी उत्पादक/निर्यातक	****	****	355
चीनी ताईपेई	सभी उत्पादक/निर्यातक	****	****	298

छ. क्षति संचयी मूल्यांकन

21. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध II (iii) में यह व्यवस्था है कि एक से अधिक देश से किसी उत्पाद के आयातों के मामले में जब पाटनरोधी जांच साथ ही साथ की जा रही हो तो प्राधिकारी इस प्रकार के आयातों के प्रभाव का संचयी रूप से आंकलन करेगा, यदि वह यह निर्धारित करता है कि :

(क) यदि प्रत्येक देश से आयातों के संबंध में पाटन मार्जिन निर्यात कीमत के प्रतिशत के रूप में व्यक्त 2 प्रतिशत से अधिक है और प्रत्येक देश से हुए आयातों की मात्रा भारत में समान वस्तु के आयात का 3 प्रतिशत है अथवा जहाँ प्रत्येक देश का निर्यात 3 प्रतिशत से कम है वहाँ संचयी रूप से आयात समान वस्तु के आयातों का 7 प्रतिशत से अधिक बनता है, और

(ख) आयातित वस्तु और समान घरेलू वस्तु के बीच प्रतिस्पर्धा की स्थितियों की दृष्टि से आयातों के प्रभाव का संचयी मूल्यांकन उचित है।

प्राधिकारी यह पाते हैं कि

- प्रत्येक सम्बद्ध देश से पाटन मार्जिन 2 प्रतिशत (न्यूनतम से कम) से अधिक है, जो पूर्ववर्ती पैराग्राफों से देखा जा सकता है;
- प्रत्येक सम्बद्ध देश से आयातों की मात्रा 3 प्रतिशत से अधिक है;
- घरेलू उत्पाद और भारत में सम्बद्ध देशों से निर्यातित उत्पाद का संतुलन है।

- (iv) यह नोट किया गया है कि आयातित उत्पादों और घरेलू समान उत्पादों का एक दूसरे के स्थान पर प्रयोग किया जा रहा है। विभिन्न पक्षकारों द्वारा आयातों के साक्ष्य और घरेलू उद्योग की ग्राहक-वार बिक्री से उसका मिलान करने पर यह स्पष्ट होता है कि ऐसे अनेक पक्षकार हैं, जिन्होंने घरेलू उद्योग से खरीद की है और सम्बद्ध देशों से आयात किया है। यह भी नोट किया गया है कि विभिन्न देशों द्वारा निर्यातित सम्बद्ध वस्तु की एक ही बाजार में प्रतिस्पर्धा हुई है;
- (v) विभिन्न सम्बद्ध देशों से विभिन्न उत्पादकों द्वारा आपूर्ति की गई सम्बद्ध वस्तु का तुलनीय बिक्री माध्यमों के जरिए उन्हीं अवधियों के दौरान भारत में विपणन किया जा रहा है;
- (vi) कीमत में कटौती सकारात्मक है और चीन और ताईवान दोनों के सम्बन्ध में पर्याप्त है;
- (vii) सम्बद्ध देशों में घरेलू उत्पादक और निर्यातक ग्राहकों की एक ही श्रेणी को उत्पाद की बिक्री कर रहे हैं।

22. उपर्युक्त के मद्देनजर यह माना जाता है कि वर्तमान मामले में घरेलू उद्योग पर आयातों के प्रभाव का संचयी आकलन उचित होगा।

घरेलू खपत/माँग

23. घरेलू खपत/विचाराधीन उत्पाद की माँग की गणना के लिए प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग की बिक्री मात्रा को भारत में हुए कुल आयातों से जोड़ा है। प्राधिकारी ने डीजीसीआईएण्डएस द्वारा उपलब्ध कराए गए आंकड़ों पर सौदेवार आधार पर विचार किया है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच की अवधि के दौरान याचिकाकर्ता ने संबद्ध देशों से सम्बद्ध वस्तु के भारत में आयातों के संबंध में प्रविष्टियों के कुछ बिल उपलब्ध कराए हैं। यह पाया गया है कि इन आयातों में से कुछ को डीजीसीआईएण्डएस द्वारा उपलब्ध कराए गए सौदेवार आयात आंकड़ों में प्रदर्शित नहीं किया गया है। अतः यह स्पष्ट है कि सौदेवार आयात आंकड़ों में आयातों की पूर्ण मात्रा को प्रदर्शित नहीं किया गया है। प्राधिकारी ने इन आयातों को डीजीसीआईएण्डएस द्वारा उपलब्ध कराए गए आयात आंकड़ों में जोड़ा है, क्योंकि इन आयात सौदों के साथ प्रविष्टि बिल, वाणिज्यिक बीजक, पैकिंग सूची, मूलता प्रमाण पत्र इत्यादि प्रस्तुत किए गए हैं। यह देखा गया है कि घरेलू माँग अथवा संबद्ध वस्तु की खपत में पर्याप्त रूप से वृद्धि हुई है जैसा कि नीचे सारणी से देखा जा सकता है :-

	घरेलू खपत/माँग			
	ए एम 01	ए एम 02	ए एम 03	जांच अवधि
संबद्ध देश	1437	45921	121200	333050
गैर संबद्ध देश	8224	33001	13853	8248
कुल आयात	9661	78922	135053	341298
घरेलू उद्योग (आबद्ध सहित)	****	****	****	****
अन्य उत्पादक	****	****	****	****
घरेलू माँग	552569	683739	805562	997600

	घरेलू खपत अथवा मांग			
	ए एम 01	ए एम 02	ए एम 03	जांच अवधि
मांग (किग्रा0)	552569	683739	805562	997600
सूची	100.00	123.74	145.78	180.54

24. प्राधिकारी नोट करते हैं कि विचाराधीन उत्पाद की मांग पिछले वर्षों की तुलना में बढ़ी है। तथापि घरेलू उद्योग की बिक्रियों में धीमी वृद्धि हुई है और इसमें क्षति अवधि के दौरान केवल 25% वृद्धि हुई है। वास्तव में, घरेलू उद्योग की बिक्री में पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में जांच अवधि में गिरावट आई है। इसके विपरीत समान अवधि के दौरान उत्पाद की मांग में 80 प्रतिशत की वृद्धि प्रदर्शित हुई है।

सम्बद्ध देश (एस सी) और अन्य देशों के मूल के आयात

आयातों की मात्रा

25. प्राधिकारी ने पिछले वर्षों में डीजीसीआईएण्डएस से सौदे-वार आयात आंकड़े एकत्र किए हैं और इन्हें डीजीसीआईएण्डएस के वास्तविक प्रविष्टि बिलों के साथ सूचित नहीं किया गया है। देश में सम्बद्ध आयातों की वास्तविक मात्रा का निर्णय करने के लिए सौदेवार आंकड़ों पर भरोसा किया गया है। चीन जन.गण., ताईवान और अन्य देशों से विचाराधीन उत्पाद के पाटित आयातों की मात्रा नीचे सारणी में दिए अनुसार है :-

	ए एम 01	ए एम 02	ए एम 03	जांच अवधि
चीन (किग्रा0)	0	41775	112218	292559
बाजार हिस्सा	0	52.93	83.09	85.72
ताईवान (किग्रा0)	1437	4146	8982	40491
बाजार हिस्सा	14.87	5.25	6.65	11.86
संबद्ध देशों के कुल आयात	1437	45921	121200	333050
एस सी का कुल बाजार हिस्सा	14.87	58.19	89.74	97.58
अन्य देश	8224	33001	13853	8248
अन्य बाजार हिस्सा	85.13	41.81	10.26	2.42
कुल आयात	9661	78922	135053	341298

26. प्राधिकारी पाते हैं कि क्षति अवधि के दौरान संबद्ध देशों से आयातों की मात्रा में भारी वृद्धि हुई है। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि विचाराधीन अवधि के दौरान पाटित आयातों की मात्रा में निरंतर एवं भारी वृद्धि हुई है। आयातों में यह वृद्धि माँग में हुई वृद्धि से अधिक है, जिसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग के हिस्से में कमी आई है।

कुल आयातों में संबद्ध देश का हिस्सा

27. वर्ष 2000-01 और जांच अवधि के बीच यह नोट किया गया है कि संबद्ध देशों से पाटित आयातों के हिस्से में वृद्धि हुई और ये भारी मात्रा में थे, जैसा कि निम्नांकित तालिका से देखा जा सकता है :-

कुल आयातों में संबद्ध देशों से आयातों का बाजार हिस्सा (पुनर्गणित आंकड़े)				
	ए एम 01	ए एम 02	ए एम 03	जाँच अवधि
चीन	0	100	269	700
बाजार हिस्सा	0	100	157	162
ताइवान	100	288.52	625.05	2817.75
बाजार हिस्सा	100	35	45	80
कुल आयात एस सी	100	3196	8434	23177
सभी संबद्ध देशों का बाजार हिस्सा	100	391	603	656

28. यह नोट किया जाता है कि संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के आयातों में कुछ वर्षों में भारी वृद्धि हुई है जिसके परिणामस्वरूप भारत में संबद्ध वस्तु के कुल आयातों के संबंध में संबद्ध आयातों के हिस्से में भारी वृद्धि हुई है। इसी के साथ, भारत को किए जाने वाले आयातों में अन्य देशों के हिस्से में भारी गिरावट आई है।

	2000-01	2001-02	2002-2003	जनवरी-दिसम्बर 03 (जाँच अवधि)
आयातों के हिस्से				
चीन	0	52.93	83.09	85.72
ताइवान	14.87	5.25	6.65	11.86
अन्य देश	85	41.815	10.26	13

कुल मॉग में पाटित आयातों का बाजार हिस्सा

29. प्राधिकारी ने भारत में खपत में संबद्ध देशों से पाटित आयातों के हिस्से की जाँच की है। प्राधिकारी पाते हैं कि संबद्ध देशों का हिस्सा जो वर्ष 2000-2001 में मॉग का 0.3% था, जाँच अवधि के दौरान बढ़कर 33% हो गया। संबद्ध देशों, घरेलू उद्योग एवं अन्य से आयातों के बाजार हिस्से पिछले वर्षों में निम्नानुसार थे :-

मॉग में घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा				
घरेलू उद्योग (आबद्ध सहित)	ए एम 01	ए एम 02	ए एम 03	जाँच अवधि
अन्य उत्पादक	****	****	****	****
पाटित आयात	1437	45921	121200	333050
अन्य आयात	8224	33001	13853	8248
कुल बाजार	552569	683739	805562	997600
बाजार हिस्से में परिवर्तन				
कुल बाजार	552569	683739	805562	997600
कुल बाजार में परिवर्तन		23.74	45.78	80.54
घरेलू उद्योग	****	****	****	****
घरेलू उत्पादन में परिवर्तन		****	****	****
पाटित आयात	1437	45921	121200	333050
पाटित आयातों में परिवर्तन		3095.62	8334.24	23076.76
अन्य आयात	8224	33001	13853	8248
अन्य आयातों में परिवर्तन		401.28	168.45	100.29
पाटित आयातों में परिवर्तन		3095.62	8334.24	23076.76
भारित प्रतिशत हिस्सा				
घरेलू उद्योग द्वारा	80.24	72.58	68.94	55.00
पाटित वस्तुओं द्वारा	0.3	6.7	15.0	33.4
अन्य आयातों द्वारा	1.5	4.8	1.7	0.8
अन्य उत्पादकों द्वारा	18.0	15.9	14.3	10.8

30. उपर्युक्त से यह देखा जाता है कि संबद्ध आयातों के हिस्से में महत्वपूर्ण रूप से वृद्धि हुई है। यह भी देखा जाता है कि इन वर्षों में जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग ने काफी बाजार हिस्सा गंवाया है। इसके अलावा यह नोट किया गया है कि अन्य देशों के आयात निर्धारित न्यूनतम सीमा से कम हैं।

आयात कीमत में वृद्धि

31. जैसा कि निम्नांकित तालिका में दर्शाया गया है; वर्ष 2000-2001 से जांच अवधि तक संबद्ध देशों की आयात कीमत के विश्लेषण से यह प्रदर्शित होता है कि संबद्ध वस्तु की आयात कीमत में 83.54% की भारी कमी हुई है।

रूपए प्रति किग्रा.	2000-2001	2001-2002	2002-2003	जन-दि., 03 (जांच अवधि)
सी आई एफ निर्यात कीमत - चीन		215.23	86.25	81.84
सूचीबद्ध		100.00	40.07	38.02
सीआईएफ निर्यात कीमत - ताईवान	501.47	123.44	90.59	87.72
सूचीबद्ध	100	24.62	18.06	17.49
संचयी रूप से संबद्ध देश	501.47	206.94	86.57	82.56
सूचीबद्ध	100	41.27	17.26	16.46
वर्ष-दर-वर्ष परिवर्तन - चीन		0	-60	-5
वर्ष-दर-वर्ष परिवर्तन - ताईवान		-75	-27	-3
वर्ष-दर-वर्ष परिवर्तन - संचयी रूप से संबद्ध देश		-59	-58	-5

आगे यह नोट किया जाता है कि संबद्ध देशों के मूल की अथवा वहाँ से निर्यातित संबद्ध वस्तुओं की कीमतों में कुछ वर्षों में अलग-अलग एवं संचयी रूप से तीव्र गिरावट आई है।

पाटित आयातों के कारण कीमत प्रभाव

32. प्राधिकारी के समक्ष यह निवेदन किया गया है कि चूँकि आयातित संबद्ध वस्तु प्रीमियम या ब्राँडेड उत्पाद नहीं है, इसलिए वह घरेलू बाजार में संबद्ध वस्तु के बिक्री पश्चात् बाजार से प्रतिस्पर्धा कर रही है। इसके अतिरिक्त यह नोट किया गया है कि घरेलू बाजार में घरेलू समान उत्पाद की कीमतों में बहुत अधिक भिन्नता है और ओईएम बाजारों की आवश्यकताओं को पूरा करने वाले घरेलू समान उत्पादों (ब्राँडेड उत्पाद) की कीमतें बिक्री पश्चात् बाजार की आवश्यकताओं को पूरा करने वाले घरेलू समान उत्पादों (बिक्री पश्चात् वस्तुएँ) की कीमतों से काफी अधिक हैं। इसलिए, पाटित आयातों के कारण

घरेलू समान उत्पादों पर कीमत प्रभाव का निर्धारण करने के लिए प्राधिकारी ने बिक्री पश्चात् बाजार में संबद्ध वस्तुओं (गैर ब्रांडेड श्रेणी) की कीमतों की तुलना पाटित आयातों की कीमतों से की है।

कीमत कटौती

33. यह निवेदन किया गया है कि घरेलू बाजार में घरेलू समान उत्पाद की कीमतों में बहुत अधिक भिन्नता है और ओईएम बाजारों की आवश्यकताओं को पूरा करने वाले घरेलू समान उत्पादों (ब्रांडेड उत्पाद) की कीमतें बिक्री पश्चात् बाजार की आवश्यकताओं को पूरा करने वाले घरेलू समान उत्पादों (बिक्री पश्चात् वस्तुएँ) की कीमतों से काफी अधिक हैं। इसलिए, कीमत कटौती मार्जिन का निर्धारण करने के लिए प्राधिकारी ने संबद्ध देश की संबद्ध वस्तु (जो सभी बिक्री पश्चात् बाजार की आवश्यकताओं को पूरा करती हैं (जिन्हें गैर ब्रांडेड कहा जाता है)) के पहुँच मूल्य की तुलना घरेलू उद्योग (गैर ब्रांडेड या बिक्री पश्चात् बाजार की आवश्यकताओं को पूरा करने वाली वस्तुएँ) के लिए निवल बिक्री कीमत से की है। घरेलू उद्योग की कीमतें कारखाना द्वार स्तर पर निर्धारित की गई थीं। चीन एवं ताइवान से आयातों की पहुँच कीमत निर्धारित करने के लिए, प्राधिकारी ने प्रयोज्य मूल सीमाशुल्कों और अन्य प्रभारों को सीआईएफ मूल्य में जोड़ा है। आयातों की पहुँच कीमत और घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत की

	संबद्ध देशों से कीमत कटौती			
चीन	एएम01	एएम02	एएम03	जाँच अवधि
पहुँच कीमत		293	113	104
बिक्री कीमत (बाजार पश्चात्)	****	****	****	****
चीन से विचाराधीन उत्पाद		****	****	****
% कीमत कटौती				60-75%
ताइवान				
पहुँच कीमत	684	168	119	112
बिक्री कीमत (बाजार पश्चात्)	****	****	****	****
ताइवान से विचाराधीन उत्पाद	(****)	****	****	****
% कीमत कटौती				60-75%

तुलना से यह प्रदर्शित हुआ है कि जाँच अवधि के दौरान संबद्ध देशों के मूल की संबद्ध वस्तुओं को भारतीय बाजार में ऐसी कीमतों पर बेचा गया था जो घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से काफी कम थी। इस प्रकार पाटित उत्पाद घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत में कटौती कर रहे थे।

कीमत हास

	पाटित आयातों से घरेलू उद्योग को कीमत हास			
	एएम01	एएम02	एएम03	जाँच अवधि
बिक्री कीमत (बाजार पश्चात्)	****	****	****	****
सूचीबद्ध	100	75	63	59
बिक्री कीमत (ओईएम बाजार)	****	****	****	****
सूचीबद्ध	100	115	106	94
बिक्री कीमत (ओईएम बाजार + बाजार पश्चात्)	****	****	****	****
सूचीबद्ध	100	87	72	70

34. उपर्युक्त से यह देखा जाता है कि घरेलू उद्योग की बिक्री कीमतों में लगातार गिरावट आई है जिसके परिणामस्वरूप कीमत हास हुआ है जो पूरी क्षति अवधि के लिए प्रत्यक्ष है।

कीमत अवमूल्यन

	एएम01	एएम02	एएम03	जाँच अवधि
पहुँच मूल्य पाटित	683.75	281.74	113.44	104.93
निवल बिक्री मूल्य (बाजार पश्चात्)	****	****	****	****
सूचकांक	100	75	63	59
बेची गई वस्तु की लागत (बाजार पश्चात्)	****	****	****	****
सीओजीएस/बिक्री अनुपात	****	****	****	****
सीओजीएस/बिक्री अनुपात (सूचकांक)	100	117	140	154

35. कीमत हास के अलावा उपर्युक्त तालिका से यह प्रदर्शित होता है कि घरेलू उद्योग को कीमत अवमूल्यन का सामना करना पड़ रहा है।

घरेलू उद्योग की स्थिति

36. भारत में घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जाँच करने के लिए प्राधिकारी ने नियमों के अनुबंध-II(iv) के अनुसार ऐसे सूचकों पर विचार किया है जिनका घरेलू उद्योग की स्थिति पर प्रभाव पड़ता है जैसे उत्पादन, क्षमता उपयोग, बिक्री की मात्रा, स्टॉक, लाभकारिता, निवल बिक्री वसूली, पाटन की मात्रा और मार्जिन आदि।

उत्पादन, क्षमता एवं क्षमता उपयोग

क्षमता उपयोग					
	इकाई	2000-01	2001-02	2002-03	जन.-दिस., 03 (जाँच अवधि)
क्षमता	मी.टन	734	734	734	734
उत्पादन	मी.टन	592	645	623	646
क्षमता उपयोग	%	80.60	87.85	84.89	87.92

37. जैसा कि ऊपर दी गई तालिका से देखा जा सकता है, घरेलू उद्योग के क्षमता उपयोग ने उत्पादन के समान रूख प्रदर्शित किया है। पिछले वर्षों की तुलना में घरेलू उद्योग की क्षमता समान बनी रही जबकि क्षमता उपयोग वर्ष 2000-2001 में 80% से बढ़कर जाँच अवधि तक 87% हो गया।

बिक्री मात्रा एवं माल सूची

माल सूची पर वास्तविक एवं संभावित नकारात्मक प्रभाव				
	एएम01	एएम02	एएम03	जाँच अवधि
माल सूची/स्टॉक किग्रा.	****	****	****	****
बिक्री मात्रा किग्रा.	****	****	****	****
सूचकांक	100	112	125	120
बिक्री मात्रा की तुलना में माल सूची %	6.69	16.96	14.97	14.53
सूचीबद्ध स्टॉक	100	284	281	261

38. उपर्युक्त से यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग की बिक्री मात्रा वर्ष 2002-2003 तक बढ़ रही थी। तथापि, इसके बाद जाँच अवधि में बिक्री मात्रा में मामूली गिरावट प्रदर्शित हुई है। कम्पनी की बिक्री मात्रा वर्ष 2000-2001 के दौरान *** मी. टन थी तथा 25% वृद्धि प्राप्त करने के बाद यह वर्ष 2002-2003 में *** मी.टन तक पहुँच गई। प्राधिकारी नोट करते हैं कि वर्ष 2002-2003 में *** मी.

उन तक पहुंचने के बाद जांच अवधि के दौरान बिक्री में *** की। उन तक गिरावट आई जबकि उत्पाद की मांग में पर्याप्त वृद्धि हुई थी। इसके परिणामस्वरूप क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के हिस्से में गिरावट आई जबकि संबद्ध देश के आयातों के हिस्से में वृद्धि हुई।

लाभ

	लाभ में वास्तविक एवं संभावित गिरावट			
	एएम01	एएम02	एएम03	जांच अवधि
	लाख रुपए	लाख रुपए	लाख रुपए	लाख रुपए
कुल बिक्री मूल्य (ओईएम एवं बाजार पश्चात्)	****	****	****	****
कुल बिक्री लागत (ओईएम एवं बाजार पश्चात्)	****	****	****	****
लाभ (लाख रुपए)	****	****	****	(****)
बिक्री की तुलना में % लाभ	****	****	****	(****)
प्रवृत्ति	100	90.92	19.96	-9.67

39. यह देखा गया है कि घरेलू उद्योग की लाभप्रदता पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा है। इस प्रकार, यह निष्कर्ष निकाला गया है कि संबद्ध देशों से आयातों से घरेलू उद्योग पर घरेलू बाजार में अपनी कीमतें कम करने के लिए दबाव पड़ा है जिससे उसकी लाभप्रदता पर इस हद तक प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ा है कि घरेलू उद्योग को क्षति अवधि के दौरान लाभप्रदता में अत्यधिक गिरावट सहनी पड़ी है एवं जांच अवधि के दौरान उसने घाटा प्रदर्शित किया है। उपर्युक्त के मद्देनजर यह निष्कर्ष निकाला गया है कि लाभ प्रदत्ता की कमी के कारण क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग को क्षति हुई है।

घरेलू कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक

40. यह नोट किया गया है कि संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु की आयात कीमतें लगातार कम हो रही हैं। यह देखा गया है कि अन्य कारकों के साथ-साथ आयातों का स्तर घरेलू कीमतों को निर्धारित करता है। यह प्रतीत होता है कि घरेलू बाजार में बाजार कीमतें पाटित कीमतों पर पाटित आयातों की अत्यधिक मात्रा के कारण कम हुई हैं। इसके अतिरिक्त यह नोट किया गया है कि संबद्ध देशों से कीमत कटौती बहुत अधिक है और संबद्ध देशों से पाटित आयातों के कारण अत्यधिक कीमतें और कीमत अवमूल्यन हुआ है।

उत्पादन

41. घरेलू उद्योग का उत्पादन निम्नानुसार था :-

उत्पादन					जन.-विस. , 3
	इकाई	2000-01	2001-02	2002-03	(जांच अवधि)
उत्पादन	मी. टन	592	645	623	646
सूचीबद्ध	%	100	108.98	105.31	109.27

घरेलू उद्योग का उत्पादन क्षति अवधि के दौरान घट-बढ़ रहा था। जबकि घरेलू उद्योग ने 2000-2001 से 2001-02 में 8% की वृद्धि प्राप्त की वहीं जांच अवधि तक उत्पादन में समग्र वृद्धि केवल 9% थी।

उत्पादकता

उत्पादकता				
	एएम01	एएम02	एएम03	जांच अवधि
व्यवसाय लाख. रु.	*****	*****	*****	*****
कर्मचारी	*****	*****	*****	*****
उत्पादकता	*****	*****	*****	*****
सूचीबद्ध	100	106.96	120.08	116.58

42. यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग की उत्पादकता में क्षति अवधि के दौरान 16% की वृद्धि हुई थी। घरेलू उद्योग की प्रति कर्मचारी उत्पादकता में, उत्पादन में वृद्धि तथा कर्मचारियों में अनुपात से कम वृद्धि के कारण सकारात्मक प्रवृत्ति दिखाई देती है।

43. तथापि, यह नोट किया जाता है कि उत्पादकता में वृद्धि के बावजूद घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में क्षति अवधि के दौरान गिरावट आई। जबकि उत्पादकता में सुधार से घरेलू उद्योग को अपने लाभों में वृद्धि करने में समर्थ होना चाहिए था वहीं यह प्रतीत होता है कि पार्टित आयातों के परिणामस्वरूप लाभ में गिरावट आई। संबद्ध वस्तु की गुणवत्ता कायम रखने तथा साथ ही साथ मात्रा का उत्पादन करने हेतु आयातकों द्वारा घरेलू उद्योग की क्षमता से संबंधित किए गए दावों को ध्यान में रखते हुए यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग के दावे सत्यापन दल द्वारा सत्यापित किए गए हैं तथा प्राधिकारी द्वारा आंकड़ों में किए गए कुछ सुधारों को छोड़कर घरेलू उद्योग के आंकड़ों को स्वीकार कर लिया गया है।

निवेश पर आय

44. लगाई गई पूंजी पर घरेलू उद्योग को आय सम्बन्धी प्रवृत्तियाँ निम्नानुसार हैं :-

वर्ष	इकाई	2000-01	2001-02	2002-03	जन.- दिस., 03
लगाई गई पूंजी पर आय	%	****	****	****	(****)
लगाई गई पूंजी पर आय	सूचीबद्ध	100	80.63	16.09	(7.71)

यह देखा जाता है कि लगाई गई पूंजी पर घरेलू उद्योग को आय में अत्यधिक गिरावट आई है (क्षति अवधि में यह गिरावट 107% से अधिक रही है) ।

रोजगार तथा मजदूरी

45. घरेलू उद्योग के रोजगार स्तर में थोड़ी सी वृद्धि हुई है । घरेलू उद्योग की मजदूरी में मामूली मजदूरी वृद्धि प्रदर्शित होती है जबकि उत्पादन की प्रत्येक इकाई पर मजदूरी के आपतन में भी वृद्धि हुई है ।

रोजगार तथा मजदूरी पर वास्तविक तथा संभावित नकारात्मक प्रभाव				
	एम01	एम02	एम03	जाँच अवधि
कर्मचारियों की संख्या	****	****	****	****
% परिवर्तन		4.65	-0.32	-1.27
उत्पादन/कर्मचारी की मात्रा	****	****	****	****
सूचीबद्ध	100	107	120	117
रोजगार	एम 01	एम 02	एम 03	जाँच अवधि
कर्मचारियों की संख्या	****	****	****	****
% परिवर्तन		4.65	-0.32	-1.27
सूचीबद्ध	100	105	104	103
मजदूरी	एम 01	एम 02	एम 03	जाँच अवधि
लाख रु./वार्षिक	****	****	****	****
% परिवर्तन		46.18	34.91	6.71
सूचीबद्ध	100	146	197	210

नकदी प्रवाह पर प्रभाव

46. यद्यपि याचिकाकर्ता एक बहुउत्पाद कंपनी है जो अन्य उत्पादों का भी उत्पादन करती है तथापि विचाराधीन उत्पाद जाँच अवधि में कंपनी के प्रचालनों का 75% हिस्सा बनता है । घरेलू उद्योग का नकद प्रवाह अंतर्ग्रस्त उत्पाद से संबंधित नकद प्रवाह संबंधी प्रचालनों को इंगित करता है । घरेलू उद्योग के नकद प्रवाह की जाँच करने के बाद यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग के नकद प्रवाह में क्षति अवधि के दौरान अत्यधिक गिरावट आई ।

लाख रु	2000-01	2001-02	2002-03	जन. - दिस., 03
नकद लाभ	****	****	****	****
सूचीबद्ध	100	92.18	32.89	8.56

47. अतः उपर्युक्त से यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग के नकद प्रवाह में क्षति अवधि में गिरावट आई। यह गिरावट भारतीय बाजार में पाटन के फलस्वरूप हुई लाभ में कमी के कारण हो सकती है।

पूंजी निवेश जुटाने की क्षमता

48. अभिलेखों की जांच करने के बाद यह नोट किया जाता है कि प्राधिकारी घरेलू उद्योग की पूंजी जुटाने की अक्षमता संबंधी किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुंचे।

निवेश					
	इकाई	2000-01	2001-02	2002-03	जन. - दिस., 03
कंपनी द्वारा किए गए नए निवेश	लाख रु	****	****	****	****
	सूचीबद्ध	100	45	34	166
विचाराधीन उत्पाद में नए निवेश	लाख रु	0	0	0	0

वृद्धि तथा पाटन का मार्जिन

49. तालिका में निम्नानुसार प्रदर्शित है कि घरेलू उद्योग ने अनेक मापदण्डों के संबंध में नकारात्मक वृद्धि का सामना किया है।

वृद्धि					
	इकाई	2000-01	2001-02	2002-03	जन.- दिस., 03
बिक्री	मी. टन	****	****	****	****
वर्ष दर वर्ष प्रवृत्ति	%		11.93	11.91	(4)
कर पूर्व लाभ	लाख रु	****	****	****	(****)
वर्ष दर वर्ष प्रवृत्ति	%		(11.18)	(79.73)	(145)
मांग में बाजार हिस्सा	%	80.24	72.58	68.94	55.00
वर्ष दर वर्ष प्रवृत्ति	%		(9.54)	(5.01)	(20)
घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत	रु./कि.ग्रा	****	****	****	****
वर्ष दर वर्ष प्रवृत्ति	%		(25.11)	(16.48)	(6)
लगाई गई पूंजी पर आय	%	****	****	****	****
वर्ष दर वर्ष प्रवृत्ति	%		(****)	(****)	(****)
नकद लाभ	लाख रु	****	****	****	****
			(7.83)	(64.90)	(74)

50. प्राधिकारी मानते हैं कि घरेलू उद्योग ने अनेक मापदण्डों के संबंध में नकारात्मक वृद्धि का सामना किया है। पूर्ववर्ती पैराग्राफों में निर्धारित पाटन के मार्जिन को काफी अधिक माना गया है।

51. आयातक द्वारा किये गए दावों की जांच

(i) गुणवत्ता के साथ-साथ मात्रा का उत्पादन करने की घरेलू उद्योग की सक्षमता के संबंध में आयातक द्वारा किए गए दावे के संबंध में यह नोट किया जाता है कि इन अनुरोधों से संबंधित आंकड़ों का निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा सत्यापन किया गया है। निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा आंकड़ों/सूचना में किए गए कुछ संशोधन को छोड़कर इन दावों को खारिज करने का कोई न्यायसंगत कारण प्रतीत नहीं होता है।

(ii) भारत में संबद्ध वस्तु की मांग और आपूर्ति के अन्तर के बारे में आयातक के तर्क के साथ-साथ भारतीय बाजार में एकाधिकार स्थापित करने के संबंध में यह नोट किया जाता है कि विचाराधीन उत्पाद की निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा आकलित मांग क्षति अवधि में 997 मी.टन के दायरे में है। यह भी नोट किया जाता है कि अकेले आवेदक की क्षमता 734 मी. टन है तथा अन्य भारतीय उत्पादकों की क्षमता 235 मी.टन के दायरे में है। अतः भारत में संबद्ध वस्तु की आपूर्ति और मांग में कोई बड़ा अन्तर नहीं है। इसके अलावा उत्पाद के स्वरूप, उत्पाद के उत्पादन के लिए अपेक्षित संयंत्र और मशीनों और उसमें अपेक्षित निवेश को देखते हुए यह नहीं लगता है कि यदि उत्पाद के लिए बाजार पाटित आयातों से मुक्त रहे तो घरेलू उद्योग मांग को पूरा करने में सक्षम नहीं होगा। तथापि, पाटन और उत्पादकता में भारी कमी की स्थिति में हो सकता है कि घरेलू उद्योग अपनी क्षमता में वृद्धि करना न चाहे। यह नोट किया जाता है कि संबद्ध वस्तु के बाजार में क्षति अवधि के दौरान मांग में 80% की वृद्धि हुई है। यद्यपि मांग में भारी वृद्धि हुई है, लेकिन घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में भारी कमी आयी है जबकि ऐसी स्थिति में सुधार की उम्मीद की जा सकती थी।

क्षति संबंधी निष्कर्ष

52. संबद्ध देशों से पाटित आयातों की मात्रा में समग्र स्तर पर और भारत में संबद्ध वस्तु की कुल मांग के संबंध में भी भारी वृद्धि हुई है। पाटित आयातों के कारण महत्वपूर्ण कीमत प्रभाव पड़ा है जिसके परिणामस्वरूप कीमत में मंदी कीमत कटौती और कम कीमतों पर बिक्री हुई है। कटौती मार्जिन और कीमत मंदी का निर्धारण किया गया है और इसे अत्यधिक माना गया है। यह भी नोट किया गया है कि बिक्री मात्राओं में धीमी वृद्धि, वित्तीय निष्पादन में लगातार विकृति, मांग के बाजार हिस्से में गिरावट (वर्ष 2001-2002 तक वृद्धि होने के बाद भारी गिरावट), जाँच अवधि के दौरान धनात्मक कीमत कटौती, धनात्मक कीमत मंदी, वर्ष-दर-वर्ष आधार पर लगाई गई पूँजी पर आय में गिरावट, औसत भण्डारों में वृद्धि आदि से क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के निष्पादन में भी भारी विकृति प्रदर्शित होती है। संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं के आयात के आधार पर पाटन का मार्जिन काफी अधिक है। घरेलू उद्योग के निष्पादन में, वर्ष 2000-2001 और जाँच अवधि के बीच तुलना को देखते हुए, उत्पाद, बिक्रियों, क्षमता उपयोग, प्रति कर्मचारी उत्पादकता की दृष्टि से सुधार हुआ है। तथापि, इसे इस तथ्य की दृष्टि से संतोषजनक नहीं माना जा सकता है कि क्षति अवधि के दौरान अनेक मापदण्डों से अत्यधिक प्रतिकूल प्रभाव प्रदर्शित होते हैं, जिनकी परिणति जाँच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के घाटा उठाने के रूप में हुई है। उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला गया है कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है।

ज. कारणात्मक संबंध**(क) भूमिका**

52. घरेलू उद्योग द्वारा वहन की गई क्षति के कारणों संबंधी निष्कर्षों पर पहुँचने के लिए तथा पाटनरोधी करार के अनुच्छेद 3.5 के अनुसार तथा यथा संशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के तहत नियम-11 के अंतर्गत अनुबंध-11 के पैरा (V) के अनुसार प्राधिकारी ने सभी ज्ञात कारकों के प्रभाव तथा उद्योग की स्थिति पर उनके परिणामों की जांच की। पाटित आयातों से इतर ज्ञात कारकों जिनसे उसी समय घरेलू उद्योग को क्षति हुई हो, की भी यह निश्चित करने के लिए जांच की गई कि इन अन्य कारकों से हुई संभावित क्षति पाटित आयातों के कारण तो नहीं थी।

(क) पाटित आयातों के प्रभाव

53. वर्ष 2000-2001 तथा जांच अवधि के बीच संबद्ध देशों से पाटित आयात मात्रा में भारी रूप से 3532% तक बढ़े (पिछले वर्ष से 100% अधिक तथा आयातों के बाजार हिस्से में छह गुने तथा जांच अवधि में मांग में 0.22% से 31% तक)। जहाँ तक निर्यात कीमतों का संबंध है उनमें सम्पूर्ण विचाराधीन अवधि के दौरान पर्याप्ततः गिरावट आई तथा जांच अवधि के दौरान दस गुने औसत से घरेलू उद्योग की कीमतों में कटौती हुई। इसके अलावा, कटौती संबंधी आंकड़े पाटित आयातों के सम्पूर्ण प्रभाव को नहीं दर्शाते क्योंकि घरेलू उद्योग की कीमतों में ह्रास हुआ। यह सब एक साथ कीमत में कमी, बाजार हिस्से में कमी तथा घरेलू उद्योग को घाटे के रूप में घरेलू उद्योग की स्थिति में गिरावट के साथ हुआ। पाटित आयातों की कीमतें समूची विचाराधीन अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की कीमतों से कम रही थी तथा उन पर एक दबाव बनाया जिससे घरेलू उद्योग को उत्पादन लागत के बढ़ने के बावजूद कीमतें घटाने हेतु बाध्य होना पड़ा। अतः यह निष्कर्ष है कि पाटित आयातों से घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई।

अन्य कारकों के प्रभाव**(क) अन्य घरेलू उत्पादकों का निष्पादन**

54. जांच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तुओं के आवेदक के अलावा भी दो अन्य घरेलू उत्पादक थे। यद्यपि उन्होंने घरेलू उद्योग के प्रारूप में तथा विधि से सूचना प्रस्तुत नहीं की है। तथापि, प्राधिकारी के समक्ष उपलब्ध कराई गई प्राधिकारी द्वारा सत्यापित सूचना की जांच से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि जांच अवधि के दौरान उन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा तथा उनके प्रचालन निष्पादन में गिरावट आई।

(घ) मांग में संकुचन अथवा खपत के ढंग में परिवर्तन

55. प्राधिकारी नोट करते हैं कि विचाराधीन अवधि के दौरान समूची मांग में कोई संकुचन नहीं हुआ है। इसके विपरीत, क्षति अवधि के दौरान समूची मांग पर्याप्त रूप से बढ़ी है। प्राधिकारी का यह भी निष्कर्ष है कि खपत के ढंग में कोई गोचर परिवर्तन नहीं हुआ है।

(ड.) पाटित कीमतों पर नहीं बेचे गए आयातों की मात्रा तथा कीमतें

56. उपलब्ध सूचना के अनुसार संबद्ध देशों से इतर देशों के मूल की संबद्ध वस्तुओं की कुल आयात मात्रा न्यूनतम से कम है तथा इसलिए उन्हें घरेलू उद्योग पर कोई प्रभाव डालने वाला नहीं माना गया है।

(च) विदेशी तथा घरेलू उत्पादकों की व्यापार प्रतिबंधात्मक पद्धतियों तक उनके बीच प्रतिस्पर्धा तथा संबद्ध वस्तु की गुणवत्ता एवं किस्म से संबंधित मुद्दे

57. प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध वस्तुओं का एकल बाजार है जहां संबद्ध देशों से पाटित आयात घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध उत्पादों के साथ सीधे प्रतिस्पर्धा करते हैं। प्राधिकारी आगे नोट करते हैं कि आयातित उत्पाद की बिक्री घरेलू रूप से उत्पादित संबद्ध वस्तुओं के समान वाणिज्यिक ग्रेडों तक विनिर्देशन को पूरा करने के लिए की जाती है। आगे नोट किया जाता है कि आयातित संबद्ध वस्तु तथा घरेलू रूप से उत्पादित वस्तुएं समान वस्तुएं हैं तथा समान अनुप्रयोग/अंतिम उपयोग के लिए प्रयोग की जाती हैं। घरेलू उद्योग द्वारा विनिर्मित संबद्ध वस्तु की गुणवत्ता मूल्य और उपलब्धता के बारे में आयातक के तर्क के संबंध में यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग विचाराधीन उत्पाद की अनेक विभिन्न किस्मों का उत्पादन करता है। इसलिए यह मालूम नहीं होता है कि याचिकाकर्ता उत्पाद की विभिन्न किस्मों का उत्पादन और आपूर्ति नहीं करता है। इसके अलावा याचिकाकर्ता, स्काई इंडस्ट्रीज इस उत्पाद का अनेक देशों को निर्यात कर रहा है। यह नोट किया जाता है कि याचिकाकर्ता ने जांच अवधि में लगभग 29 देशों को निर्यात किया था जिनमें कुछेक विकसित देशों सहित विश्व के विभिन्न भागों से देश शामिल थे।

(छ) घरेलू उद्योग की प्रौद्योगिकी, निर्यात निष्पादन तथा उत्पादकता में सुधार

58. याचिकाकर्ता के अभिलेखों की जांच के आधार पर प्राधिकारी यह मानते हैं कि प्रौद्योगिकी में सुधार, घरेलू उद्योग को क्षति पहुंचाने वाला एक संगत कारक नहीं रहा है।

59. आगे यह नोट किया जाता है कि विभिन्न आर्थिक संकेतकों के संबंध में विभिन्न निष्पादनों का निर्धारण केवल घरेलू बिक्री के संबंध में किया गया है। अतः प्राधिकारी यह मानते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा वहन की गई वास्तविक क्षति, घरेलू उद्योग के निर्यात निष्पादन का परिणाम नहीं हो सकती।

60. जहां तक उत्पादकता में सुधार का प्रश्न है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि विचाराधीन अवधि के दौरान उत्पादन प्रति कर्मचारी प्रति वर्ष जैसे उत्पादकता मापक क्षति अवधि के दौरान लगभग समान बने रहे। जांच के आधार पर प्राधिकारी यह मानते हैं कि उत्पादकता स्वयं घरेलू उद्योग को क्षति का कारण नहीं है।

(ज) कारण-कार्य-संबंध पर निष्कर्ष

61. वर्ष 2000-2001 तथा जांच अवधि के बीच आयातों के मात्रा में भारी वृद्धि से मांग/खपत में आयातों के हिस्से में वृद्धि होती है। इसके प्रत्यक्ष परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग के हिस्सों में वर्ष 2000-2001 तथा 2001-2002 के बीच वृद्धि दर्ज करने के बाद वर्ष 2000-2001 तथा जांच अवधि के बीच गिरावट आई। पाटित आयातों का बाजार हिस्सा अवधियों के दौरान क्रमशः बढ़ता गया था। एक प्रत्यक्ष परिणाम के रूप में घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा काफी कम हो गया था। सम्बद्ध देशों से आयातों के कारण घरेलू उद्योग की कीमतों में कटौती हो रही थी। एक प्रत्यक्ष परिणाम के रूप में घरेलू उद्योग ऐसी कीमत पर उत्पाद की बिक्री करने से वंचित हो गया था जिससे वह अपने उत्पादन की लागत वसूल कर सकता और उचित लाभ अर्जित कर सकता। इसके परिणामस्वरूप लाभ, नकदी प्रवाह और निवेश पर लाभ के अनुसार घरेलू उद्योग के कार्य-निष्पादन में काफी हानि हुई।

62. उपर्युक्त विश्लेषण के कारण जिससे पाटित आयातों के क्षतिकारक प्रभावों से घरेलू उद्योग की स्थिति पर ज्ञात कारकों के प्रभावों का अलग-अलग विवेचन हुआ है। यह निष्कर्ष निकाला गया है कि ये अन्य कारक इस तथ्य के प्रति गलत नहीं हो सकते कि पाई गई वास्तविक क्षति पाटित आयातों के कारण हो सकती है।

63. इसलिए यह निष्कर्ष निकाला गया है कि सम्बद्ध देशों के मूल के पाटित आयातों के कारण पाटनरोधी नियमावली के नियम 11 और पाटनरोधी करार के अनुच्छेद 3.5 के अर्थ के भीतर घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है।

(झ) घरेलू उद्योग का हित

64. सामान्य रूप से पाटनरोधी शुल्कों का प्रयोजन ऐसे पाटन को समाप्त करना है जिससे घरेलू उद्योग को क्षति हो रही हो और भारतीय बाजार में खुली और उचित प्रतिस्पर्धा की स्थिति पुनः स्थापित करना है जो देश के सामान्य हित में है।

65. प्राधिकारी यह मानते हैं कि पाटनरोधी शुल्कों के लगाने से संबद्ध वस्तुओं का प्रयोग करके विनिर्मित उत्पादों की कीमत के स्तर प्रभावित हो सकते हैं और इसके फलस्वरूप इन उत्पादों की सापेक्ष प्रतिस्पर्धा पर कुछ प्रभाव पड़ सकता है। तथापि, भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्धा इन पाटनरोधी उपायों से कम नहीं हो जाएगी। इसके विपरीत पाटनरोधी उपाय लागू करने से पाटन प्रथाओं द्वारा प्राप्त अनुचित लाभ रूक जाएँगे, घरेलू उद्योग का पतन रूकेगा और इससे संबद्ध वस्तु के ग्राहकों को अधिक व्यापक पसंद उपलब्ध बनाए रखने में सहायता प्राप्त होगी।

66. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि पाटनरोधी उपायों को लागू करने से संबद्ध देशों से आयात किसी भी प्रकार से प्रतिबंधित नहीं होंगे और इसलिए ग्राहकों को उत्पाद की उपलब्धता प्रभावित नहीं होगी। उपभोक्ताओं के पास तब भी आपूर्ति के दो अथवा अधिक स्रोत बने रहेंगे।

(अ) निष्कर्ष

67. प्राधिकारी उपर्युक्त पर विचार करने के पश्चात् निम्नलिखित निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि:-

- (क) सम्बद्ध वस्तुएँ सम्बद्ध देशों से इनकी सामान्य कीमत से कम कीमत पर भारत को निर्यात की गई हैं;
- (ख) घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है;
- (ग) क्षति संचयी रूप से सम्बद्ध देशों से पाटित आयातों के कारण हुई है ।

68. प्राधिकारी घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति को दूर करने के लिए सम्बद्ध देशों से सम्बद्ध वस्तुओं के सभी आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लगाना आवश्यक समझते हैं । प्राधिकारी द्वारा निर्धारित पाटन मार्जिन उपर्युक्त पैराग्राफों में दर्शाया गया है । प्राधिकारी पाटन मार्जिन के समान अथवा उससे कम पाटनरोधी शुल्क की राशि की सिफारिश करने का प्रस्ताव करते हैं जो यदि लगायी जाएगी तो घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति समाप्त हो जाएगी । क्षति का निर्धारण करने के प्रयोजनार्थ आयातों के पहुँच मूल्य की तुलना जांच अवधि के लिए निर्धारित याचिकाकर्ता कम्पनी की गैर क्षतिकारक कीमत के साथ करने का प्रस्ताव है ।

69. तदनुसार, प्राधिकारी यह सिफारिश करते हैं कि चीन जनवादी गणराज्य और चीनी ताईपेई के मूल की अथवा वहां से निर्यातित सीमाशुल्क शीर्ष 5806 के अंतर्गत आने वाले "पाईल वीव सहित नैरो बोवेन फैब्रिक्स" जो मानव निर्मित रेशों से बनी है और जिसे चिपकाने वाली टेप के रूप में प्रयोग किया जाता है (हुक और लूप टेप फेस्टनर अथवा वेल्क्रो टेप्स के रूप में भी ज्ञात) के सभी आयातों पर केन्द्र सरकार द्वारा इस संबंध में जारी की जाने वाली अधिसूचना की तारीख से निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाया जाए । पाटनरोधी शुल्क निम्नलिखित तालिका के कॉलम 9 में उल्लिखित राशि और केन्द्र सरकार द्वारा इस संबंध में जारी की जाने वाली अधिसूचना की तारीख से लगाए जाने वाले प्रति किलोग्राम आयातों के पहुँच मूल्य के बीच अंतर के बराबर होगी जो निम्नलिखित देशों से उद्गमित अथवा निर्यातित सीमाशुल्क टैरिफ के अध्याय 58 के भीतर आने वाली सम्बद्ध वस्तुओं के सभी आयातों पर लगाई जाएगी:-

क्र. सं.	शीर्ष	माल का विवरण	विनिर्देशन	उद्गम का देश	निर्यात का देश	उत्पादक	निर्यातक	संदर्भ कीमत	माप की इकाई	मुद्रा
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)	(10)	(11)
1.	5806	पाईल वीव सहित नैरो वूवन फैब्रिक जो मानव निर्मित रेशों से बनी है (हुक और लूप टेप फास्टर अथवा वेल्क्रो अथवा फास्टनिंग टेप के रूप में भी ज्ञात)	कोई	कोई देश	चीनी ताइपेई	कोई उत्पादक	कोई निर्यातक	7.61	किग्रा.	अम. डालर
2.	5806	-वही-	-वही-	चीनी ताइपेई	कोई देश	कोई उत्पादक	कोई निर्यातक	7.61	किग्रा.	अम. डालर
3.	5806	-वही-	-वही-	कोई देश	चीन जन. गण.	कोई उत्पादक	कोई निर्यातक	8.02	किग्रा.	अम० डालर
4.	5806	-वही-	-वही-	चीन जन. गण.	कोई देश	कोई उत्पादक	कोई निर्यातक	8.02	किग्रा.	अम. डालर

70. इस उद्देश्य के लिए आयातों का पहुँच मूल्य सीमाशुल्क अधिनियम 1962 के अधीन सीमाशुल्क विभाग द्वारा गथा निर्धारित आकलन योग्य मूल्य होगा और उसमें सीमाशुल्क अधिनियम 1975.32 की धारा 3, 3क, 8ख, 9 तथा 9क के तहत लगाए गए शुल्कों को छोड़कर सभी प्रकार के शुल्क शामिल होंगे।

71. उपर्युक्त के अध्यक्षीन प्राधिकारी दिनांक 10 जनवरी, 2005 के प्रारंभिक जांच परिणामों की पुष्टि करते हैं।

72. इस आदेश के खिलाफ कोई अपील अधिनियम के संगत उपबंधों के अनुसार सीमाशुल्क, उत्पाद शुल्क तथा सेवाकर अपीलीय न्यायाधिकरण के समक्ष दायर की जा सकती है।

73. प्राधिकारी अधिनियम के संगत प्रावधानों और इस संबंध में समय-समय पर जारी सार्वजनिक सूचनाओं के अनुसार निश्चयात्मक उपायों, जैसा कि इसमें अनुशंसा की गई है, को जारी रखने, उनमें संशोधन करने अथवा समाप्त करने की जरूरत की समय-समय पर समीक्षा कर सकते हैं। ऐसी किसी समीक्षा हेतु कोई अनुरोध प्राधिकारी द्वारा स्वीकार नहीं किया जाएगा यदि इसको किसी हितबद्ध पक्षकार द्वारा इस प्रयोजनार्थ निर्धारित समय सीमा के भीतर दायर नहीं किया जाता है।

क्रिस्टी एल. फेर्नान्डेज, अपर सचिव एवं निर्दिष्ट प्राधिकारी

1742 66/05-4

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY**(Department of Commerce)****(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI DUMPING AND ALLIED
DUTIES)****NOTIFICATION**

New Delhi, the 7th, June, 2005

FINAL FINDINGS

Subject : Anti-dumping investigation concerning imports of Narrow Woven Fabrics originating in or exported from the China PR and Chinese Taipei.

No. 14/24/2003-DGAD - Having regard to the Customs Tariff Act, 1975 as amended in 1995 and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, thereof;

A. PROCEDURE:

1. The procedure described below has been followed:-

(i) On 9th June 2004, the Designated Authority (hereinafter referred to as Authority), under the above Rules, issued a public notice (initiation notification) publicised in the Gazette of India, initiating an anti dumping investigation with regard to imports of narrow woven fabrics originating in or exported from China PR and Chinese Taipei (Also referred to as subject countries). The Anti dumping proceeding was initiated following a complaint received from M/s Sky Industries Ltd, Mumbai (the applicant) on behalf of the domestic industry representing a major proportion of the domestic production of said product. The complaint contained evidence of dumping of the said product and of material injury resulting there from, which was considered sufficient to justify the initiation of the proceedings.

(ii) Before initiation, the Authority notified the Embassies/High Commissions of subject countries in India about the receipt of fully documented petition made by the petitioner before proceeding to initiate the investigation in accordance with sub-rule (5) of Rule 5 supra;

(iii) According to sub rule (2) of the rule 6 supra, the Authority forwarded copy of the said public notice to the known exporting producers, importers, industry associations, embassies of the countries concerned and to the complainant and gave them an opportunity to make their views known in writing.

(iv) According to sub-rule (3) of Rule 6 supra, the Authority provided a copy of the application to all the known exporters and Embassies of subject countries in India. According to sub-rule (4) of Rule 6 supra, the Authority provided a copy of the relevant questionnaire to all the known exporters and Embassies of subject countries in India and other interested parties. The Embassies/High Commissions of subject countries in New Delhi were also informed about the initiation of investigation and requested to advise the exporters/producers from their countries to respond to the questionnaire within the prescribed time

(v) The Authority sent questionnaires, to elicit relevant information, to the following known exporters from subject countries.

1. M/s. Tri Hook, Chinese Taipei
2. Taiwan Special Tape Company, Chinese Taipei
3. Zhejiang Hongwing Weaving Co. Ltd, China PR
4. Chico Textile Industries Ltd, Chinese Taipei,
5. Taiwan Joca Corporation, Chinese Taipei

(vi) None of the exporters have responded to the exporter's questionnaire and notice of initiation. None of the importers except M/s Country crafts have responded to the importers questionnaire. However, they have not submitted any non confidential copy of the confidential information to the Authority. The Authority has considered all views expressed and submissions made by various interested parties to the extent they are relevant for the present investigation.

(vii) The Authority kept available non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file maintained by the Authority and kept open for inspection by the interested parties;

(viii) **** in this notification represents information furnished by the interested parties on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules;

(ix) The investigation of dumping and injury covered the period from 1st January 2003 to 31st December 2003 (Also called the period of investigation or POI). The examination of trends in the context of injury analysis covered the period from 1st April 2000 to the end of period of investigation.

(xi) The preliminary findings were issued on 10th January 2005 and all the interested parties were requested to submit their comments within a period of 40 days. The Authority also forwarded a copy of preliminary findings to the Embassies of subject countries with a request that

exporters and producers in their country may be advised to furnish their views on the preliminary findings.

(x) The Authority provided an opportunity to all interested parties to present their views orally on 2nd March 2005. All parties presenting views orally were requested to file written submissions, of the views expressed orally. The parties were advised to collect copies of the views expressed by the opposing parties and offer rebuttals, if any.

(xi) Arguments raised by the interested parties before announcing the preliminary findings, which have been brought out in the preliminary findings notified have not been repeated herein for sake of brevity. However, the arguments raised by the interested parties after the issuance of the Preliminary findings and disclosure are considered in this final findings.

(xii) In accordance with Rule 16 of rules, the essential facts/ basis considered for these findings were disclosed to known interested parties on 25th May 2005 and comments received on the same are duly considered in Final Findings.

(xiii) The Authority sought and verified all the information it deemed necessary for the purpose of final determination of dumping and resulting injury. The Authority conducted on the spot investigation of the domestic industry to the extent considered necessary. The cost of the production of the domestic industry was also analysed to work out the best cost of the production and the cost to make and sell the subject goods in India on the basis of Generally Accepted Accounting Principles based on the information furnished by the petitioner so as to ascertain if anti Dumping duty lower than dumping margin would be sufficient to remove injury to the domestic Industry.

B. Product under Consideration.

2. The Product under consideration in the present investigations is "narrow woven fabric having pile weave, made up of man made fibers, used as a fastening tape" (henceforth also referred to as subject goods). In market parlance, the subject goods are known by various synonyms such as "Hook & Loop Tape Fasteners", "Velcro Tapes", "Fastening Tapes", "Fasteners" etc. The distinguishing feature of the product is "pile weave". The subject goods are described in terms of Peel Strength, Shear Strength and Light Fastness. Hook and Loop fasteners are generally made from man made fibers (yarns) nylon (Nylon 6 and Nylon 6,6), polyester etc. The product under consideration is produced in sizes typically varying between 12mm to 125mm of width. Further, while the product is sold in the market place in terms of length of the product

(measured in meters) and the associated costs and prices of various product types vary with width, the same becomes almost homogenous when converted into weight. The major uses of the subject goods are in industries such as garment industries, surgical & orthopedic apparatus manufacturing, shoes & footwear manufacturing, luggage/bags manufacturing, toys, automobile upholstery and various other industrial segments. Narrow Woven fabric is classified under customs Sub heading 580610 of the Customs Tariff Act 1975. After the provisional findings, M/s Country Craft, importer, asked the Authority to clarify whether the investigation has been performed only on hook and loop tape, whereas the notification mentions the entire chapter. The Authority confirms that Anti dumping investigations have been conducted with regard to the product under consideration only as mentioned above (also referred to as subject goods) and as stated in the initiation notification, as well as in the preliminary findings, and the customs classification is indicative in nature and is in no way binding on the scope of the investigation.

C. Like Article.

3. The petitioner has claimed that goods produced by it are like articles to the goods originating in or exported from subject countries. There is no significant difference in the subject goods produced by the petitioner and those exported from subject countries. Petitioner claims that the two are technically and commercially substitutable.

4. M/s Country Craft has drawn the attention of the authority that subject goods are not homogenous and the raw material used to manufacture the hook and loop tape are differently classified basically in 3 types, i.e polyster, Nylon/polyster and Nylon which means that prices of the inputs and that of the three end products are different and therefore, they have added that one reference type for all different types of product are not correct. The domestic industry has maintained that the basic application of the subject good is in fastening. Hook & Loop can be used in different industry segments. Hook & loop tape used by the garment industry, leather industry and other industries, has the same basic characteristics, is produced using the same raw materials and serves the same general purpose and hence they should be treated as a like article.

5. Rule 2 (d) relating to the definition of like article specifies that like article means an article that is 'identical' or 'alike' in all respects to the articles under investigation or in the absence of such an article, another article having characteristics closely resembling those of the article under investigation In order to establish that

subject goods produced by the domestic industry is a Like Article to that exported from subject countries, characteristics such as technical specifications, manufacturing process, functions and uses and tariff classification have been considered by the Authority. After examining, the Authority concludes that there is a great amount of substitutability between different types of subject goods and different types are produced from the same basic raw materials, production technology and manufacturing process, is employed for the same general purpose (i.e., as fastening tape), falls under the same tariff classification. It is further held that the mere fact that there are a number of different types of the product under consideration produced and sold by every producer does not vitiate the finding that the various types are like articles when these types are produced from the same basic raw materials, production technology and manufacturing process and is employed for the same general purpose (i.e., as fastening tape),.

6. Therefore, the Authority notes that the "Narrow Woven fabrics" manufactured in the subject countries and exported in Indian market and subject goods manufactured by the domestic industry have essentially the same product characteristics, manufacturing process & technology, functions & uses, pricing, distribution & marketing and tariff classification of the goods. The two are technically and commercially substitutable. The Narrow woven fabrics produced by the domestic industry is being treated as like article to the goods being imported from China PR and Taiwan in the present investigation in accordance with the anti dumping rules.

D. Domestic Industry

7. There are four producers of domestic like products in India. M/s Sky Industries Ltd., Mumbai, has filed the application. M/s. Magic Fasteners Pvt. Ltd., Delhi and Siddharth Filament Pvt. Ltd and M/s Siddarth Magic Tape Pvt Ltd, Surat have supported the application filed by the applicant. These supporting companies some information relating to injury after initiation of investigations. The Authority notes that that production by M/s Sky Industries Ltd., petitioner, constitutes more than 50% of the total domestic production of like article in India.

8. The Authority has determined that (a) production of the petitioner companies constitute a major proportion in indian production; (b) domestic producers expressly supporting the application account for more than 50 per cent of total production of the like product produced by the domestic industry; and (c) the application has been made by or on behalf of the domestic industry. The Authority after examining the above, determines that the petitioners constitutes a domestic Industry within the meaning of the rule 2(b) read with 2(d) and it satisfies the criteria of standing to file the petition in terms of Rule 5(3) (a) of the Rules supra.

9. However, following the imposition of preliminary anti-dumping duties, the three other producers of subject goods in India i.e M/s. Magic Fasteners Pvt. Ltd., Siddharth Filaments Pvt. Ltd and Siddharth Magic Tape Pvt. Ltd showed their willingness to participate in the investigations and provided substantial information to reach decisions on injury. However, after verification of information filed by these producers, it is found that the information provided two producers did not conform to the form and manner prescribed and could not be adopted for the purpose of determination of injury and therefore the Authority has decided to include M/s Magic Fasteners Pvt Ltd but exclude Siddharth Magic Tape and Siddharth Filaments in the purview of the domestic industry.

E. De-minimus.

10. As regards ascertaining that the imports from the subject countries during the period of investigation (POI) are above de-minimus levels, the Authority has referred to the transaction wise data from the subject countries as made available by DGCIS. After examining the data, The Authority holds that imports from imports from all the subject countries are above de-minimus levels in terms of volume of imports.

F. Dumping.

11. Under Section 9A(1) I of the Customs Tariff Act 1975, Normal value in relation to an article means:

The comparable price, in the ordinary course of trade, for the like article when meant for consumption in the exporting country or territory as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or

When there are no sales of the like article in the ordinary course of trade in the domestic market of the exporting country or territory, or when because of the particular market situation or low volume of the sales in the domestic market of the exporting country or territory, such sales do not permit a proper comparison, the normal value shall be either:-

Comparable representative price of the like article when exported from the exporting country or territory or an appropriate third country as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or

The cost of production of the said article in the country of origin along with reasonable addition for administrative, selling and general costs, and for profits, as determined in accordance with the rules made under sub-section (6)";

Provided that in the case of import of the article from a country other than the country of origin and where the article has been merely transhipped through the country of export or such article is not produced in the country of export or there is no comparable price in the country of export, the normal value shall be determined with reference to its price in the country of origin.

12. The Authority sent questionnaires to all the known exporters for the purpose of determination of normal value in accordance with Section 9A(1)(c). None of the exporters have responded to the initiation and questionnaire in any form and consequently, they have been treated as uncooperative in this investigation.

F (1) China PR

(a) Cooperation

13. None of the known exporters has responded to the exporters' questionnaire by giving information with regard to various appendices mentioned in the exporters' questionnaire.

(b) Normal Value & Export Price:

14. The Authority notes that none of the exporters have submitted any information as required under the exporter's questionnaire. It is also noted that they have also not supplied any information rebutting the presumptions as mentioned in the 8(3) of the Annexure I of the Anti Dumping Rules pertaining to Non market economy. As no information has been submitted under various Appendixes, the Authority cannot determine whether the domestic sales have been made in the ordinary course of trade..

15. In the absence of relevant information from the exporter, the Authority has constructed the normal value as per para 7 of the Annexure 1 of the AD Rules for all producers/exporters from China PR. Export price at the ex. factory level has been determined by taking weighted average export price to India after taking into account total volume of imports from China PR with adjustments.

(c) Dumping Margin:

16. In accordance with Rule 6(iv) of annexure I to the anti dumping rules, the dumping margin was established on the basis of weighted average normal values with the weighted average export price. The comparison showed the existence of dumping of the subject goods by the exporter during the POI. The weighted average dumping margin, expressed, as a percentage to the export price has been determined and is 355

F (2) Chinese Taipei

(a) Cooperation

17. None of the exporters after the initiation has responded to the exporters' questionnaire by giving information with regard to various appendices mentioned in the exporters' questionnaire. Subsequent to initiation of the investigations, Taiwanese Economic and Cultural centre on behalf of their government asked the Authority to re ascertain the Chinese Taipei exports to India as their trade statistics did not show any exports to India during the POI. They also requested the Authority to terminate the investigation against Chinese Taipei as no imports have been effected into India from that country. The Authority noted in the preliminary determinations that it had initiated the subject investigation after ascertaining the transaction wise import information from DGCIS. However, after receiving the letter from Chinese Taipei, the Authority ascertained the imports from one of the inland ports of the Delhi (ICD Tughlakabad) by requesting for transaction wise imports from that port of the subject goods originating from Chinese Taipei. After examining the import transactions, it was informed to the Authority that there were substantial number of transactions evidencing imports of subject goods from that country. Accordingly a copy of the import statement evidencing imports from Chinese Taipei along with the names of the exporters and bills of entry numbers with dates were forwarded to the Chinese Taipei Authorities. However, subsequent the public hearing, Economic division of Taiwan Economic and Cultural centre, New Delhi has confirmed they did export the subject goods during the period of investigation to India.

(b) Normal Value & Export Price:

18. The Authority notes that none of the exporters have submitted any information as required under the exporter's questionnaire. As no information has been submitted under various Appendixes, the Authority can not determine whether the domestic sales have made in the ordinary course of trade. Under the circumstances Normal value under the rules is determined on the basis of facts available as per rules 6 (8).

19. Export price at the ex-factory level has been determined by taking their weighted average export price to India with adjustments.

(c) Dumping Margin:

20. In accordance with Rule 6(iv) of annexure I to the anti dumping rules, the dumping margin was established on the basis of weighted average normal values with the weighted average export price. The comparison showed the existence of dumping of the subject goods by the exporter during the POI. The weighted average dumping margin, expressed, as a percentage to the export price has been determined and is 298%.

Country	Name of the Producer/exporter	Normal value	Export Price	D.M%
China PR	All Producers/exporters	****	****	355
Chinese Taipei	All Producers/exporters	****	****	298

G. Injury

Cumulative assessment

21. Annexure II (iii) to the Anti Dumping Rules provide that in case imports of a product from more than one country are being simultaneously subjected to anti dumping investigations, the designated authority will cumulatively assess the effect of such imports, in case it determines that:

- (a) the margin of dumping established in relation to the imports from each country is more than two percent expressed as percentage of export price and the volume of the imports from each country is three percent of the imports of the like article or where the export of the individual countries less than three percent, the imports cumulatively accounts for more than seven percent of the imports of like article, and;
- (b) cumulative assessment of the effect of imports is appropriate in light of the conditions of competition between the imported article and the like domestic articles.

The Authority finds that

- i) the margins of dumping from each of the subject country are more than 2% (de-minimus) as may be seen from the earlier paragraphs;
- ii) the volume of imports from each of the subject countries is more than the 3%;

- iii) the domestic like product and product exported from subject countries into India are like articles;
- iv) It is noted that imported products and domestic like products are being interchangeably used. Evidence of imports by various parties and correlation of the same with customer wise sales of the domestic industry makes it evident that there are a number of parties who have resorted to purchase from the domestic industry and imports from subject countries. It is further noted that subject goods exported by various countries compete in the same market;
- v) The subject goods supplied by various producers are being marketed in India during the same periods through comparable sales channels
- vi) Price undercutting is positive and significant in respect of both China PR and Taiwan.
- vii) The domestic producer and exporters in the subject countries are selling the product to the same category of consumers.

22. In view of the above, it is held that cumulative assessment of impact of imports on the domestic industry would be appropriate in the present case.

Domestic Consumption/Demand

23. For the calculation of the domestic consumption/demand of the product under consideration, the Authority has added the sales volume of the domestic industry to the total imports into India. The Authority has considered data provided by the DGCI&S on transaction to transaction basis. The Authority notes that during the course of investigation, the petitioner has provided a number of bills of entries in respect of imports into India of the subject goods from subject countries. It is found that a number of these imports are not reflected in the transaction wise import data made available by the DGCI&S. It is thus evident that full volume of imports is not reflected in the transaction wise import data. The Authority has added these imports in the import data made available by the DGCI&S, as these import transactions are supported with bills of entry, commercial invoice, packing list, certificate of origin, etc it is seen that the domestic demand or consumption of the subject goods increased significantly as shown in the table below.

	Domestic consumption / Demand			
	AM01	AM02	AM03	POI
Subject countries	1437	45921	121200	333050
Non Subject Countries	8224	33001	13853	8248
Total Imports	9661	78922	135053	341298
Domestic Industry (Including Captive)	****	****	****	****
Other Producers	****	****	****	****
Domestic Demand	552569	683739	805562	997600

Domestic Consumption or Demand				
	AM01	AM02	AM03	POI
Demand (Kg)	552569	683739	805562	997600
Index	100.00	123.74	145.78	180.54

24. The Authority notes that demand of the product under consideration has been increasing over the years. However, sales of the domestic industry showed a sluggish growth and achieved only 25% growth during the injury period. In fact, the sales of the domestic industry declined in the POI as compared to preceding year. At the same time demand of the product showed 80% growth during the same period.

Imports originating in the subject country (SC) and other countries

Volume of imports

25. The Authority has collected transaction wise import data from DGCIS over the years and the same along with actual bills of entries not reported in the DGCIS transaction wise data is relied upon to decide the actual volume of subject import into the country. The volume of dumped imports of the product under consideration from China PR, Taiwan and as also from other countries is as given in the table below:

	AM01	AM02	AM03	POI
China (Kg)	0	41775	112218	292559
Market Share	0	52.93	83.09	85.72

Taiwan (Kg)	1437	4146	8982	40491
Market Share	14.87	5.25	6.65	11.86
Total Subject countries Imports	1437	45921	121200	333050
Total market share of SC	14.87	58.19	89.74	97.58
Other Countries	8224	33401	13853	8248
Other market share	85.13	41.81	10.26	2.42
Total Imports	9661	78922	135053	341298

26. The Authority finds that the import volumes from the subject countries increased significantly during the injury period. It can therefore be concluded that there has been steady and significant increase in volume of dumped imports over the period under consideration. Increases in dumped imports have been more than increase in demand, resulting into decline in share of domestic industry.

Share of subject country in total imports:

27. Between 2000-2001 and the POI, it is noted that the share of dumped imports from subject countries increased and was substantial, as may be seen from the table below:

Market Share of Imports from subject countries (SC) in Total imports (Index data)				
	AM01	AM02	AM03	POI
China	0	100	269	700
Market Share	0	100	157	162
Taiwan	100	288.52	625.05	2817.75
Market Share	100	35	45	80
Total Imports SC	100	3196	8434	23177
Market Share of all SC	100	391	603	656

28. It is noted that imports of subject goods from the subject countries significantly increased over the years,

resulting in significant increase in share of subject imports in relation to total imports of the subject goods into India. At the same time, share of other countries in imports into India declined significantly.

	2000-01	2001-02	2002-2003	Jan-Dec, 03 (POI)
Share of imports from				
China	0	52.93	83.09	85.72
Taiwan	14.87	5.25	6.65	11.86
Other Countries	85	41.815	10.26	13

Market share of dumped imports in total demand

29 The Authority has examined the share of dumped imports from the subject countries in consumption in India. The Authority finds that share of subject countries, which was 0.3% in 2000-01 increased to 33% of the demand during the POI. Market share of imports from subject countries, domestic industry and others were as follows over the periods:

Market Share of Domestic Industry in Demand				
Domestic Industry (Including Captive)	AM01	AM02	AM03	POI
	****	****	****	****
Other producers	****	****	****	****
Dumped Imports	1437	45921	121200	333050
Other Imports	8224	33001	13853	8248
Total Market	552569	683739	805562	997600
<u>Changes in Mkt Share</u>				
Total Market	552569	683739	805562	997600
Changes in Total Market		23.74	45.78	80.54
Domestic Industry	****	****	****	****
Changes in Dom Prod		****	****	****
Dumped Imports	1437	45921	121200	333050
Changes in Dump Imp		3095.62	8334.24	23076.76
Other Imports	8224	33001	13853	8248
Changes in Other Imp		401.28	168.45	100.29
Changes in Dump Imp		3095.62	8334.24	23076.76
<u>% Share held by</u>				
Domestic Industry	80.24	72.58	68.94	55.00
Dumped goods	0.3	6.7	15.0	33.4

Other Imports	1.5	4.8	1.7	0.8
Other producers	18.0	15.9	14.3	10.8

30. It is seen from the above that share of subject imports increased significantly. It would also be seen that the domestic industry lost significant market share over the years and during the POI. It is further noted that other countries imports are below de minimis level.

Evolution of import price

31. As shown in the table below, cumulative analysis of subject country import price from 2000-01 to POI shows that import price of the subject good drastically declined by 83.54%

Rupees Per Kilograms	2000-01	2001-02	2002-03	Jan-Dec, 03 (POI)
CIF export price – China		215.23	86.25	81.84
Indexed		100.00	40.07	38.02
CIF export price – Taiwan	501.47	123.44	90.59	87.72
Indexed	100	24.62	18.06	17.49
Subject Country Cumulatively	501.47	206.94	86.57	82.56
Indexed	100	41.27	17.26	16.46
Year by year change- China		0	-60	-5
Year by year change- Taiwan		-75	-27	-3
Year by year change- Subject Country Cumulatively		-59	-58	-5

It is further noted that prices of the subject goods originated in or exported from subject countries individually and cumulatively showed steep declines over the years.

Price effects on account of dumped imports

32. It has been represented before the Authority that imported subject goods are competing in the domestic market with the after sales market of the subject goods as imported subject

goods are not premium or branded products. It is further noted that prices of the domestic like product in the domestic market vary a great deal and the prices of the domestic like products catering to the OEM markets (branded products) are considerably more than the prices of the domestic like products catering to the after sales market (after sales goods). Therefore, for determining the price effects on the domestic like products on account of dumped imports, the Authority has compared the prices of the subject goods in the after sales market (non branded category) to the dumped import prices.

Price Undercutting.

33. It has been represented that prices of the domestic like product in the domestic market vary a great deal and the prices of the domestic like products catering to the OEM markets (branded products) are considerably more than the prices of the domestic like products catering to the after sales market (after sales goods). Therefore, for determining the price undercutting margin, the Authority has compared the landed value of the subject goods (all of which cater to the after sales market (called non branded) from subject countries with the net sales price for the domestic industry (non branded or catering to the after sales market). The prices of the domestic industry were determined at the ex factory level. To determine landed price of imports from China and Taiwan, the Authority has added applicable basic customs duties and other charges to the CIF value. Comparison of landed price of imports and selling price of domestic industry

	Price Undercutting from Subject countries			
China	AM01	AM02	AM03	POI
Landed Price		293	113	104
Selling price (After Market)	****	****	****	****
PUC from China		****	****	****
% price undercutting				60-75%
Taiwan				
Landed Price	684	168	119	112
Selling price (After Market)	****	****	****	****
PUC from Taiwan	(****)	****	****	****
% Price undercutting				60-75%

showed that during the period of investigation, the subject goods originating in the subject countries were sold in the Indian market at prices, which were significantly below the selling prices of domestic industry. Dumped products were thus significantly undercutting the domestic industry's selling price.

Price Depression

Price Depression of domestic industry from dumped imports				
	AM01	AM02	AM03	POI
Selling prices (After Market)	****	****	****	****
Indexed	100	75	63	59
Selling prices (OEM Market)	****	****	****	****
Indexed	100	115	106	94
Selling prices (OEM Market+After Market)	****	****	****	****
Indexed	100	87	72	70

34. It is seen from above that there is a constant decline in the selling prices of the domestic industry resulting in a price depression which is evident during the entire injury period.

Price suppression

	AM01	AM02	AM03	POI
Landed value Dump	683.75	281.74	113.44	104.93
Net sales Value (After Market)	****	****	****	****
Index	100	75	63	59
Cost of goods sold (After Market)	****	****	****	****
COGS/Sales ratio	****	****	****	****
COGS/Sales ratio (Index)	100	117	140	154

35. Apart from the price depression, the above table shows that domestic industry is suffering from price suppression also.

Situation of the Domestic Industry

36. For the examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry in India, the Authority considered such indices having a bearing on the state of the industry as Production, Capacity Utilisation, Sales Quantum, Stock, Profitability, Net Sales Realisation, the Magnitude and Margin of Dumping etc in accordance with Annexure II (iv) of the Rules supra.

Production, capacity and Capacity Utilisation

Capacity Utilization					
	Unit	2000-01	2001-02	2002-03	Jan-Dec, 03 (POI)
Capacity	MT	734	734	734	734
Production	MT	592	645	623	646
Capacity Utilization	%	80.60	87.85	84.89	87.92

37. Capacity utilization of the domestic industry has shown the same trend as that of production, as may be seen from the table above. Capacity of the domestic industry remained the same over the years whereas capacity utilization increased to 87% by the POI from 80% in 2000-2001.

Sales Volume and Inventories

	Actual and Potential Negative Effects on Inventories			
	AM01	AM02	AM03	POI
Inventories/Stocks Kg	****	****	****	****
Sales Volume Kg	****	****	****	****
Index	100	112	125	120
Invent % to Sales Volume	6.69	16.96	14.97	14.53
Indexed Stocks	100	284	281	261

38. It is noted from above that sale volumes of the domestic industry were increasing up to the period 2002-03. However, sales volumes have shown a marginal decline thereafter in the period of Investigation. Sales volume of the domestic industry was ****MT during 2000-01 and after achieving a 25% growth the same reached to **** MT in 2002-03. The Authority notes that after reaching **** MT in 2002-03, sales fell to **** MT during the POI, even when the demand of the product increased significantly. Resultantly, the share of domestic industry declined during the injury period whereas the share of subject country imports increased.

Profits

	Actual and Potential decline in profits			
	AM01	AM02	AM03	POI
	Rs.Lacs	Rs.Lacs	Rs.Lacs	Rs.Lacs
Total Sales Value (OEM & After Mkt)	****	****	****	****
Total Cost of sales (OEM & After Mkt)	****	****	****	****
Profit (Rs lacs)	****	****	****	(****)
% of profit to the Sales		****	****	(****)
Trend		90.92	19.96	-9.67

39. It is seen that profitability of the domestic industry has been severely impacted. Thus, it is concluded that imports from subject countries may have forced the domestic industry to reduce the prices in the domestic market, which has directly impacted its profitability levels to such an extent that the domestic industry is suffering significant deterioration in the profitability during the injury period and during the POI, it has even reported losses. In view of the above, it is concluded that domestic industry has suffered injury on account of decline in profits during the injury period.

Factors affecting domestic prices:

40. It is noted that the import prices of subject goods from the subject countries are continuously coming at lower

prices. It is noted that the level of imports amongst other factors determines the domestic prices. The market prices in the domestic market appear to have been driven down by the higher volumes of dumped imports at dumped prices. It is further noted that price undercutting from the subject countries is very significant and there is significant price depression and price suppression on account of dumped imports from subject countries..

Output

41. Production of the domestic industry was as follows:

Production					
	Unit	2000-01	2001-02	2002-03	Jan-Dec, 03 (POI)
Production	MT	592	645	623	646
Indexed	%	100	108.98	105.31	109.07

The Production of the domestic industry was fluctuating through injury period: When the domestic industry achieved a growth of 8% from 2000-01 to 2001-02, overall growth in production was only 9 % by the POI.

Productivity

Productivity				
	AM01	AM02	AM03	POI
Turnover Lakhs	****	****	****	****
Employees	****	****	****	****
Productivity	****	****	****	****
Index	100	106.96	120.08	116.58

42. It is noted that the productivity of the domestic industry increased 16% during the injury period. Per employee productivity of the domestic industry shows positive trend due to increase in production and less than proportionate increase in employees.

43. However, It is noted that in spite of increase in productivity, profitability of the domestic industry declined during the injury period. While improvement in productivity should have enabled the domestic industry to increase its profits, It appears that dumped imports resulted in decline in profits. With regard to the claim made by the importer concerning the ability of the domestic industry to produce quality as well as quantity of the subject goods, it is noted that claims of the domestic industry have been verified by the verification team and the data of the domestic industry has been accepted except for some corrections in the data which have been made by the Authority.

Return on investments

44. The trends in domestic industry's return on capital employed is as follows:

Year	Unit	2000-01	2001-02	2002-03	Jan-Dec, 03
Return on Capital Employed -	%	****	****	****	(****)
Return on Capital Employed	Indexed	100	80.63	16.09	(7.71)

It is seen that the domestic industry's return on capital employed has severely deteriorated (the decline is about 107% over the injury period).

Employment and Wages

45. There is a little increase in the employment level with the domestic industry. Wages of the domestic industry show normal wage increases, while incidence of wages per unit of production has also increased.

Actual and Potential Negative Effects on Employment and Wages				
	AM01	AM02	AM03	POI
No of Employees	****	****	****	****
% Change		4.65	-0.32	-1.27
Volume of Production/Emp	****	****	****	****
Index	100	107	120	117
Employment	AM01	AM02	AM03	POI
No of Employees	****	****	****	****
% Change		4.65	-0.32	-1.27
Index	100	105	104	103
Wages	AM01	AM02	AM03	POI
Rs Lacs /Annum	****	****	****	****
% Change		46.18	34.91	6.71
Index	100	146	197	210

Effects on cash flow

46. Even though the petitioner is a multi product company involved in production of some other products also, the product under consideration constituted 75% of company's operations in the POI. The cash flow of the domestic industry is reflective of cash flow operations relating to product involved. After examining the cash flow of the domestic industry, it is noted that cash flow of the domestic industry deteriorated significantly over the injury period.

Rs. Lacs	2000-01	2001-02	2002-03	Jan-Dec, 03
Cash profit	****	****	****	****
Index	100	92.16	32.35	8.56

47. It is thus noted from the above that cash profit of the domestic industry declined in the injury period. The decline

could be due to decline in profits as a result of dumping in the Indian market.

Ability to raise capital investments

48. After examining the records, it is noted that authority did not come across any inability of the domestic industry to raise capital.

Investments					
	Unit	2000-01	2001-02	2002-03	Jan-Dec, 03
Fresh investments by the company	Rs.Lacs	****	****	****	****
	Indexed	100	45	34	166
Fresh investments in the product under consideration	Rs.Lacs	0	0	0	0

Growth and Margin of dumping

49. As shown in the table below, the domestic industry has faced negative growth in many parameters.

Growth					
	Unit	2000-01	2001-02	2002-03	Jan-Dec, 03
Sales	MT	****	****	****	****
Year by Year trend	%		11.93	11.91	(4)
Profit Before Tax	Rs. Lacs	****	****	****	(****)
Year by Year trend	%		(11.18)	(79.73)	(145)
Market share in Demand	%	80.24	72.58	68.94	55.00
Year by Year trend	%		(9.54)	(5.01)	(20)
Selling Price of Domestic Industry	Rs/Kg	****	****	****	****
Year by Year trend	%		(25.11)	(16.48)	(6)
Return On Capital	%		****	****	****

Employed					
Year by Year trend	%		(****)	(****)	(****)
Cash Profit	Rs. Lacs	****	****	****	****
			(7.83)	(64.90)	(74)

50. The Authority finds that domestic industry faced negative growth in respect of a number of parameters. The margin of dumping as determined in the earlier paragraphs is considered very significant.

51. Examination of claims made by the importer

(i) With regard to the claim made by the importer regarding the capability of the domestic industry to produce quality as well as quantity, it is noted that data pertaining to these submissions have been verified by the Designated Authority. No justifiable reasons appear to reject these claims, except for some corrections in the data/information, which have been made by the Designated Authority.

(ii) With regard to the argument of the importer about the demand and supply gap of the subject goods in India and at the same time creating a monopoly in the Indian market, it is noted that demand for the product under consideration assessed by the Designated Authority is in the region of 997MT in the investigation period. It is also noted that the capacity of the domestic industry is 734 MT. and capacity of other Indian Producers appear to be in the region of 235 MT. Thus, there is no wide gap in the supply and demand of the subject goods in India. Furthermore, given the nature of product, the plant & machinery required for production of the product and the investment required therein, it does not appear that the domestic industry would not be able to meet the demand, should the market for the product remain free from dumped imports. However, in a situation of dumping and significant erosion in profitability, domestic industry may not like to enhance their capacity. It is noted that the market of the subject goods has reported 80% increase in demand during the injury period. While there has been significant growth in demand, the profitability of the domestic industry has been significantly

eroded, while an improvement could have been expected in such a situation.

Conclusions on Injury

52. There has been significant increase in the volume of dumped imports from subject countries at the absolute level and also in relation to total imports and also in relation to total demand of subject goods into India. There has been significant price effect on account of dumped imports resulting into price depression, price undercutting and price suppression. The undercutting margin as well as the price depression have been determined and are considered to be significant. It is further noted that sluggish growth of sales volumes, continuous deterioration in the financial performance, decline in market share in demand (significant decline after showing increase up to 2001-2002), positive price undercutting in POI, positive price depression, decline in return on capital employed on a year to year basis, increase in average stock etc shows significant deterioration in the performance of the domestic industry over the injury period. The margin of dumping on account of import of subject goods from subject countries is very significant. The performance of the domestic industry, when compared between 2000-2001 and POI improved in terms of production, sales, capacity Utilization, Productivity Per Employee. However, this can not be considered satisfactory, given the fact that large number of parameters are showing significant adverse trends during the injury period which have culminated into the domestic industry suffering losses during the POI. On the basis of the above analysis, it is concluded that the domestic industry has suffered material injury.

H. Causal link

(a) Introduction

52 In order to reach its conclusions on the cause of the injury suffered by the domestic industry and in accordance with Article 3.5 of Agreement of Anti Dumping and as per para (v) of Annexure II under Rule 11 under Customs Tariff Act as amended, the Authority examined the impact of all known factors and their consequences on the situation in that industry. Known factors other than the dumped imports, which could at the same time have injured the domestic industry, were also

examined to ensure that the possible injury caused by these other factors was not attributed to the dumped imports.

(a) Effect of dumped imports

53. Between 2000-01 and the POI, dumped imports from the subject countries increased significantly in volume by 3532% (more than 100% from the previous year and in market share of imports by six times and in demand from 0.22% to 31% in the POI. As regards the export prices, they decreased substantially during the whole period under consideration and undercut domestic industry prices during the POI on average by ten times. Moreover, undercutting figures did not show the full impact of the dumped imports, since domestic industry prices were depressed. All this coincided with the deterioration of the situation of the domestic industry in terms of price reductions, reduced market shares as well as loss to the domestic industry. Prices of dumped imports were below those of the domestic industry throughout the period under consideration and exerted a pressure on them which forced the domestic industry to decrease prices in spite of increasing costs of production. It is, therefore, concluded that the dumped imports caused material injury to the domestic industry.

Effect of Other factors

(a) Performance of Other Domestic producers:

54. There were two other domestic producers of the subject goods during the period of investigation apart from the domestic industry. Though they have not submitted the information in the form and manner of domestic industry proforma, it could be concluded from the examination of information made available and verified by the Authority that they have been adversely impacted during the POI and their operating performance has gone down.

(d) Contraction of demand or Changes in the pattern of consumption

55. The Authority notes that there is no contraction in the overall demand during the period under consideration. On the

contrary, the overall demand has increased significantly during the injury period. The Authority also concludes that there is no apparent change in the pattern of consumption.

(e) Volume and Prices of imports not sold at the dumped prices

56. According to the available information, the total import volume of the product concerned originating in countries other than subject countries are de-minimus and therefore, they are considered not to have had any impact on the domestic industry.

(f) Trade Restrictive practices of and competition between foreign and domestic producers and issues relating to the quality and types of the subject goods

57. The Authority notes that there is a single market for the subject goods where dumped imports from the subject countries compete directly with the subject goods produced by the domestic industry. The authority further notes that the imported product is sold to meet the similar commercial grades and specification as domestically produced subject goods. It is further noted that the imported subject goods and domestically produced goods are like articles and are used for similar applications and uses. With regard to argument of importer about the quality, rate and availability of the subject goods manufactured by the domestic industry, it is noted that the domestic industry produces a very large no. of different types of the product under consideration. It therefore does not appear that the petitioner does not produce and supply wide variety of the product. Further, the Petitioner, Sky Industries, has been exporting the product to a very large number of countries. It is noted that the petitioner exported to about 29 countries in the investigation period, which included Countries from different parts of the world, including some of the developed countries.

(g) Developments in Technology, Export performance and productivity of the Domestic Industry

58. On the basis of the examination of the records of the petitioner, the authority holds that developments in technology,

has not been a relevant factor for the injury to the domestic industry.

59. It is further noted that the various performance with respect to various economic indicators have been determined with respect to domestic sales only. Hence, the authority holds that material injury suffered by the domestic industry may not as a result of the export performance of the domestic industry.

60. As regards improvement in productivity, the authority notes that during the period under consideration, the productivity measures as output per person employed per year has tended to be the almost same during the injury period. On the basis of the examination, the authority holds that the productivity per se is not the cause for the injury to the domestic industry.

(h) Conclusion on causation

61. Significant increase in volume of imports between 2000-01 and POI lead to increase in share of imports in demand/consumption. As a direct consequence, share of domestic industry declined between 2000-01 and POI after recording an increase between 2000-01 and 2001-02. Market share of the dumped imports gradually increased over the periods. As a direct consequence, the market share of the domestic industry declined significantly. Imports from the subject countries were significantly undercutting the prices of the domestic industry. As a direct consequence, the domestic industry was prevented from selling the product at a price, which would have enabled it to recover its cost of production and earn a reasonable profit. This led to significant deterioration in the performance of the domestic industry in terms of profits, cash flows and return on investment.

62. Given the above analysis which has properly distinguished and separated the effects of all known factors on the situation of the domestic industry from the injurious effects of the dumped imports, it is concluded that these other factors as such did not reverse the fact that the material injury found may be attributed to the dumped imports.

63. It is, therefore, concluded that the dumped imports originating in the subject countries have caused material injury to

the domestic industry within the meaning of Rule 11 of Anti Dumping rules and article 3.5 of the Agreement of Anti Dumping.

I Indian Industry interest.

64. The purpose of anti dumping duties in general is to eliminate dumping which is causing injury to the domestic industry and to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country.

65. The Authority recognizes that the imposition of anti dumping duties might affect the price levels of the products manufactured using subject goods and consequently might have some influence on relative competitiveness of these products. However, fair competition on the Indian market will not be reduced by the anti dumping measures. On the contrary, imposition of anti dumping measures would remove the unfair advantages gained by dumping practices, would prevent the decline of the domestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of subject goods.

66. The Authority notes that the imposition of anti dumping measures would not restrict imports from subject countries in any way, and therefore, would not affect the availability of the product to the consumers. The consumers could still maintain two or even more sources of supply.

J. CONCLUSIONS:

67. The Authority has, after considering the foregoing, come to the conclusion that:

- A. The subject goods have been exported to India from the subject countries below its normal value.
- B. The domestic Industry has suffered material injury;
- C. The injury has been caused cumulatively by the dumped imports from subject countries.

68. The Authority considers it necessary to impose an anti dumping duty on all imports of subject goods from subject countries in order to remove the injury to the domestic industry. The margin of dumping determined by the Authority is indicated in the paragraphs above. The Authority proposes to recommend

the amount of anti dumping duty equal to the margin of dumping or less, which if levied, would remove the injury to the domestic industry. For the purpose of determining injury, the landed value of imports is proposed to be compared with the non-injurious price of the petitioner company determined for the period of investigation.

69. Accordingly, the Authority recommends that the definitive anti dumping duties be imposed by the Central Government on all imports of "narrow woven fabric having pile weave made up of man made fibers, (also known as hook and loop tape fasteners or Velcro tapes or fastening tape) falling within Custom Heading 5806 originating in or exported from Peoples Republic of China and Chinese Taipei. The Anti-Dumping duty shall be the difference between the amount mentioned in column 9 of the following table and the landed value of imports per Kg on all the imports of subject goods falling within Chapter 58 of the Customs Tariff, originating in or exported from the countries mentioned below: -

S. No.	Heading	Description of goods	Specification	Country of origin	Country of Export	Producer	Exporter	Reference price	Unit of measurement	Currency
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)	(10)	(11)
1.	5806	"narrow woven fabric having pile weave, made up of man made fibers, (also known as hook and loop tape fasteners or Velcro tapes or fastening tape	Any	Any country	Chinese Taipei	Any producer	Any exporter	7.61	Kg	US Dollar
2.	5806	do	do	Chinese Taipei	Any country	Any producer	Any exporter	7.61	Kg	US Dollar

3.	5806	do	do	Any country	China PR	Any producer	Any exporter	8.02	Kg	US Dollar
4.	5806	do	do	China PR	Any country	Any producer	Any Exporter	8.02	Kg	US Dollar

70. Landed value of imports for the purpose shall be the assessable value as determined by the Customs under the Customs Act, 1962 and all duties of customs except duties under sections 3, 3A, 8B, 9 and 9A of the Customs Tariff Act, 1975.32.

71. Subject to the above, the Authority confirms the preliminary findings dated 10th January 2005.

72. An appeal against this order shall lie before the Customs Excise and Service Tax Appellate tribunal, in accordance with the Act.

73. The Authority may review the need for continuation, modification or termination of the definitive measures, as recommended herein, from time to time, as per the relevant provisions of the Act, and public notices issued in this respect from time to time. No request for such a review shall be entertained by the Authority unless the same is filed by an interested party within the time limit stipulated for this purpose.

CHRISTY L. FERNANDEZ, Addl. Secy. & Designated Authority